4864

4864

1324

...क शोध संस्थान
4864

श्रीगणेशायनमः ॥

षटऋतुपदावली ॥

रसिकअली कृत

प्रथमश्रीयुगल जन्मबधाई

बसंतऋतु ॥ ध्रुपद ॥

आजुतौ निशान बाजै दशरथरायजूके प्रगट हैं सुन्दर चतुर चारि कुवँर । वेदन की घोर बंदीजन करत शोर ॥ कौशल्या महल दुरतछत्र चवँर । कनक कलश ध्वजपताकन की चौक पूरि बजत बधाइ माइ

मंगल घरघर ॥ ऐसो अनन्द भयो सबको दुख
दूरिगयो रामजन्म सुनत कान्हर हरषे
अलि ॥ १ ॥

रेखता ॥

चलो सखि हर्षितावालमें ।भयेसुतरा[illegible] शवल
में ॥ मँगन रस हँसत खेलोरी । गावोगी र[illegible] [illegible]मस
हिलोरी ॥ सजोरी साज स्वांगनमें । नचैगी ग[illegible]
आंगन में ॥ करोरी प्रेमकी सैलै । उघारो आ[illegible]
मनफैलै॥परेसुखसिंधुमेगहेरे।उठेजहँ रंगकीलहे[illegible]
खरे अनुराग झूलैरी। खुशीकेबाग फूलैरी॥ल[illegible]
री प्रान पालनको।खेलावो गोदलालनको ॥ [illegible]
निवासके प्यारे। अवध नृपराजके वारे। [illegible]
सुनोरी नौबतैं बाजैं।मनौ सावन् के घन [illegible]

नचैंपुरसुघर कामिन्सी।दमक तनचपल दामिनि-न्सी॥मचीछबि धूपधूमन्की । मनो घटाश्याम ल्मन्की। बराषि सुरसुमनमन मो है । सुभग बग-मालसीसोहै ॥ खुशीके बरस पानीरी । हरे जग राजरानी री ॥ भरेमन रसिक सागरसे । उपाशक रामनागरसे ॥बढ़ीअब प्रीतिकी नदियां । उखरि बहीकूल कुलबगियां । कृपा निवासमन मखिआ अवध पुर सादिया अछिया ॥ ३ ॥

रागगौरी ॥

राजरे बधाईबाजै छै । नवझरि रूड़ोलागैछै ॥ सहनाई सरसाई नौबति घन ज्यों गाजैछै । घर घर बन्दनवार साथिया साखिसब मङ्गल साजैछै॥ नाचि गाय बखतावर हरषे मनडो छाजैछै ४ ॥

नलेहों महरानी जूकर कँगना।बहुत दिननकी आस लगीहै सोदिन पहुँच्यो आनी जू ॥ रामलाल जु की लेहों नेछावर जो मोरे मन मानीजू। रामदासकीआस यहीहैमहलटहलरुचिमानीजू॥

आजु रावलामे धूमघनी छै । रमझोला बाजै छै ॥ मृगनयनी कामिनि बनिनाचै घुँघुरारी घमघोला गाजैछै। महाराज धनहँसि हँसि बांटत देशधरण सुख साजैछै ॥ कृपानिवास महमङ्गल औसर आजु बिराजैछै ॥ ६ ॥

रँगीली बधाई बाजै आज । सुन्दर सुत जायो कौशिल्या त्रिभुवन को शिरताज ॥ नरनारी सब मगन भये हैं उमग्यो सकल समाज । कृपा निवास बाढ़यो सुखसागर सरयो देवनकोकाज ७

आज्ञुनगारे की सुनु सजनी औरै रंग अवाजैरी । नृपके द्वार बजत निशिदिन कछुआज्ञु अधिक सुख साजैरी ॥ पूरेदिन सबभइ नृपरानी जोकहुँ ईश नेवाजैरी । होयपुत्र पंकतिरथ जूक पूजै सबमन काजैरी ॥ इतनेही कोउ आनि कही नृप द्वारबधाई बाजैरी। रसिक अली सुनि मोद मगन मन तन रोमवलि राजैरी ॥ ८॥

अवधनृपति के द्वारे बजैं आवाजै अति सुख रलियाहो । जायोपूत कौशल्यारानी सुकृत द्रुम शुभफलियाहो॥ मङ्गलकलश पताका तोरण घर २ गावत अलियाहो । रसिकअलीसजि २ गज गामिनि नृप मंदिर को चलियाहो ॥ ९॥

अवधमें मङ्गलछायो ।जायो पूतकौशल्यारानी

अनुपम सुखदरशायो।नभअरुनगर निशानगान धुनि विप्रवेद यशगायो । रसिकअली अवधेश को सुखलखि सुरपति मोदलजायो ॥ १० ॥

चलोरी देखोमाई । आनँद मङ्गल उमग्यो अवध आज कौशल्या सुतजाई ॥ गजमणि चौकरची पुरबनिता मङ्गल कलश भराई । बंदन-वारद्वार प्रतिबांधत ध्वजपताक छविछाई।गलि-यनकीच अरगजे माची धूपधूम नभछाई। रसिक अली नाचै सुरबनिता कुसुममाल बरसाई ११ ॥

चैती ॥

रसकी रसीली अँखियां तकिमारि रघुलाल मोरे रामारे । भूलिगैल सुधिबुधि मोरी तलफ

जियजान ॥ सिलमनी प्यारैं विरहिनि प्यारी बिलखान ॥ १२ ॥

मोंहनी मोपैडारी दैया ॥ दशरथजू के लाल मोरे रामारे । मोहनी श्रीजनकदुलारी मोहनी सँगबाल मोरे रामारे ॥ मोहनीसी सूरति मूरति मोहनी सब चाल मोरे रामारे। जुगलप्रिया दोउ रसिया बिहरै रस जाल मोरे रामारे ॥ १३ ॥

दादरा ॥

कहरकरै रे लला की लटकनियां ॥ कुंचित कच घुँघुँरारे राजत सुन्दरबदन हँसनियां किलकनियां॥अरुनुक झुनुक नृपआंगन खेलत मुक्ता माल हृदय खटकनियां॥ रामगोपाल सुवनमह रानी लाय लेत कर कनियां ॥ १४ ॥

कवित्त ॥

करम कीचकाले भाले भागको न लेसकहु कुमति कसाले खाले करत बयाने हैं । केते घर घाले ते निराले साधु सज्जन ते लोक वेदटाले जाले जानत जहानेहैं ॥ मनके मराले ताले काम मग मीननके करहित पालेवाले बल्लभ न आने हैं ॥ छोड़ि रामलाले करत फिरत कसाले साले सबमतवाले मतवाले की समाने हैं १५ ॥

रेखता ॥

नजानो इश्क को हांसी पड़ीहै कठिन गल फांसी । सजनके हाथ में गांसी नछूटै लाजकी तांसी ॥ भयामन आपनाराजी करै क्या ख़ल्क दिल्पाजी । दिलो से डर बिडर भाजी सो

जीतै इश्ककी बाजी ॥ सिरौंको लालपरवारो जरे को और भी जारौ। गरूरी खोयतन गारौ सहीहै इश्कतब यारो ॥ परीहै इश्कके फेरे नहीं मरयादके नेरे। कृपानिवास मनमेरे अवध के छैलने घेरे ॥ १६ ॥

रागगौरी ॥

नमो नमो श्रीजनकलली। जन्मतभई बिदेह नृपतिगृह कीरतिचहुँदिशिउमँगिचली। मिथिला आलबाल निमिकुलकी सुकृतसुवेलीसुफलफली। षटगुणदल सम्पतिपारिपूरण सेवत अलिबड़भाग भली ॥ बीनतमुनि माली ब्रह्मादिक बालचरित्र मृदु कुसुमकली। कृपा बिवश सौरभ प्रेमाभर चितवत अनुपम रूपझली ॥ सूरकिशोर निगम

जलसींचत मायक गुनये कौनरली । औलम्बन रघुबीर कलपतरु भइ भूपरि उपमा अतुली १७॥

ध्रुपद ॥

शची सीरढोरे चँवर उरबसी उड़ावे भौर सावित्री चरण सेवै महिषी महेशकी । बरुण धनराज दिनराज उड़राज कन्या सेवत गन्धर्व वो कुमारी सुरेशकी ॥ ललवानरेशनकी दमकत नवदामिनीसी आसपास सौज लिये खड़ीदेश देश की । ललोहितिलोककी त्रियनमें किशोर सूरअद्भुत किशोरि बेटिराजमिथिलेशकी १८ ॥

तिल्लाना ॥

बधाई माइ आजरी । श्रवण परी धुनिचौंकि चली सुनि मानो घनलौ गाजरी ॥ नाचि उठे

मनबरहीलौ बनाबिवश भईगइलाजरी। कृपानि-
वास सिया जननीको अचलरहो सुखराजरी१९

ठुमरी ॥

जनकपुर बधैया बाजै भली ॥ लिये कर थार सजी कर सखियां बाजाबाजैं वे घनज्यों गाजैंहो। भवनभरि सुखसुनि उमगिचली ॥ बन्दी बिरद बदत बीणाधर बन्दनवार द्वारलिखि सथियां ॥ मंगल गान होवे कर पिकबैनी वे सकल मिलि भूपति भवनचली ॥ अलिसिय रसिकभयो सुख त्रिभुवन बरषहिं सुमन देवगण कीत्रिय ॥ २० ॥

आईरी मै सुनि के सादियां ॥ फजलकरै मौला तेरे घरकहर परौ तेरी बादियां । बीबी

गोद खेलावो माई बैठि भलाई गादिया ॥ कृपा निवासि पै मेहरकरो अब जाउ सियासँग बादियां २१॥

रागकाफी ॥

डगर बगर में धूम सुघरघर बरसगांठि प्यारे जनकलली की । गावत प्रमदा विशद बधाई सुभग सुनैना कोखि फली की ॥ मंगल गंध प्रकट मिथिलासर राम भवँरहित कमलकलीकी। बिपुल बिलास प्रकाश सकल जग जीवन कृपानिवास अलीकी २२ ॥

भलेदिन जन्मलियो रसदानी । निरखत मुखछबि कुवँरि सियाको मगनभये रायरानी ॥ सकलसिद्धिसम्पदा पदारथमुक्ति चारअरुजानी।

जनकपुरी में कोउ न सलारत रूप दरशमति सानी ॥ सुर नर मुनि वांछित जासुखको कापै जातबखानी। सो सुख गलिनगलिन पुरचौहट थकेकामरतिआनी॥ सकलसराहत भाग्यजनक को जीवन सुफल प्रमानी। कृपानिवास रसिक की जीवन शोभा नयन समानी॥ २३॥

रागजाजवंती॥

ये आलि जानकी जनम लियो सब सुख-
ानी ॥ माधौमास नौमितिथि सकल लगन
ृहभय अनकूल सब योगसिद्धि जानी॥ रसरूप
णसानी रसिकजीवन धनआलिकुल देवतरु
मपटरानी। सचिलक्षिरतिछबीमानी कियो है
नी सुरगणसीसमनी जन सुखदानी॥ निमि

बंशिराय रानी सौरभ सकल जग तिहुँपुर प्रान-
रासी सुकृति सयानी । गँगन विमान चढ़ीसुर
गण नरनारी । बरषि सुमनसिया आलि शुभ
पानी ॥ २४ ॥ दिलचीता कीतामैडे साइयांवे ।
मिथिलेशजू के सादिया बधाइयांवे ॥ जाइ लली
सिया साहेबजादी रानिजू खूबकमाइयांवे
घरपुरद्वार खैर खुशवक्ती आलमजातअघाइयांवे
भये दीदार बिहारीदासपूर मुरादा पाइयांवे २

दादरा ॥

बाजै बाजै बधाई आज जनकपुर रंगभरी
रानी सुनैना बेटी जाई आजु सुदिन शुभय
घरी ॥ सुखी भये सुरसंत भूमिद्विज असुरन
शिरगाज परी । गोरेअंग रूप गुणराशी दारि

की द्युति दूरि करी। घर घर गानकरत पुरबानिता मङ्गलघट प्रतिद्वारं धरी॥ साजि साजि यानबिबुध नभछाये बरषत सुमन लगाय झरी। रसिक अली गावत सुरगायक नाचत कोटिन इंद्रपरी २६

चलु छांड़ि सकल गृह काज जनकपुर कामिनियां। अनुपम बेटी जाई सुनैना सुनत दौरि जैसे दामिनियां॥कंचनथार आरती साजै कामिनि कोटि लजावनियां। पहुँचीजाय महल के भीतर आरति करति नेछावनियां॥ कोकिलकंठ लजात गानसुनि गावत जन्मबधावनियां। जाके पद सेवत हरिहरतिय शारदगुण गणगावनियां॥ रसिकअली की स्वामिनि सिय सू नातेनेह निवाहनियां॥ २७॥

दादरा॥

बढ़ैया पलना लैकर आयो। रच्यो रुचिर पाटीर नीलमणिकीलै ललितलगायो॥ किंकिणि ललित लगी कंचनमय झूमक जोति जगायो। मैना मोर कपोत कीरबर सारस हंस बनायो॥ पवन प्रसंग नचत गुंजत लखि बिधि आचरज भुलायो। महरानी बहु दै नेवछावरि पलना निकट रखायो॥ कोमल बसन बिछाय सुताजब पौढ़ाइ छबिपायो। गायगीत हुलरावत रानी नागरि नेवछावरि नवल झुलायो॥ रसिक अली निज स्वामिनि ऊपर तनमन धन निवछायो॥ २८॥

त्याइरी मैं झूने झुझुने। झूनेझुझुने झूनें झुझुने। देशदेश की कैंजरि आई। आइरी मैं ललिके

जन्मसुनि ॥ झँगुली टोपीलेहौ ललीकी दीजै महरानि जो भावै तुम्हारे मन ॥ कृपानिवास आससब पूजी देखिरही सियरूप मधुरछबि२९॥

रागशारँग॥

जनसी जानकी जग जानी।बिमुख बिपिनि पावक सी भासी रसिकसालि हित पानी ॥ मातु पिता कीरति सुख सागर भणै कबिकोबिद बानी। कृपानिवास अलीकी जीवन रामरसिक पटरानी ॥ ३० ॥

अवधपुर मङ्गल धुनि सरसानी । नवल बधू की वरष गाँठि सुनि हरषी दशरथरानी ॥ नगर नगारे नौबति बाजै नाचत नवला गावत बानी। कृपानिवास लली मुख निरखत वारिसु पीवत पानी ॥ ३१ ॥

गावत मङ्गल मिथिलापुर की । मिथिलापुर
जनक नगरकी ॥ गोरी गुण योवन गर्बीली
तान रसीली मधुरे स्वरकी । सौंधे लपट झपट
अङ्गन सो अलिगण झपट निपट चातुरकी ॥
निर्तितनवलनटी पटफरकत सरकतनीवी मृदुकटि
मुरकी । कवरिन सौ झरिपरत कुचन पर केसरि
कुमकुम सी करदुरकी ॥ बिवस भई गरलाज
तियनकी प्रीति प्रगट भइ सबके उरकी । सुरनर
पत्नी जितनी आईं कौतूहल रस बस आतुरकी
कृपानिवास खड़ी पुतरी सी सुथरीसीसपरीसी
मानौं भुरकी ॥ ३२ ॥

रागकाफी ॥

बधाई लैकर आई मिथिलेश के द्वार । सु

सागरि कुलदीप उजागरि भवन प्रगटभइ आई॥ साजि शृँगार चली सखि निजनिज भूषण बसन बनाई ॥ एकसौ एक सुरंग अभंगसो अंग अनंग लजाई।बाजत ताल मृदंग मुचंग उपंग शंख सहनाई॥ गुण आगरि नागरि बरगावै नित-त आनँदताई । शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुमन बृष्टि झरिलाई। चिरजीवो श्रीजनक नंदनी रूप अली बलिजाई ॥ ३३ ॥

रावलरंग बधाई छै। मङ्गल मणि महरानि सुनैना सुंदरि कन्या जाई छै॥ सखियन हिय सरसाई छै। मङ्गल गावत आई छै ॥ सिया सखी शोभा त्रिभुवन की जनक नगर पर छाई छै॥ ३४ ॥

रेखता ॥

चरण गति चलत है प्यारी निरखि गति मगन महतारी । ठुमक ठुम अवनि पग धरती झनक झुनु पैंजनी करती ॥ अली मिलि खेलने लाई मुखाग्रे गेंद गुड़वाई । नचै शुकशारिका मोरा । फिरै कल हंसका जोड़ा ॥ नचावत ताल दैबाला देखावत रत्नमणि माला। भयो सुख भवन मेंभारी गिनत गुण शारदा हारी ॥ मातुकी गोदफिरि आई। उतारत लूनअरुराई ॥ विबुधजन सुमन वरषावैं । रेखता रामजन गावैं ॥ ३५ ॥

बधाई झूलना ॥

बाजै दुन्दुभी वे नृपमिथिलेश के दरबार । निकड़ेलिजाइयां वे रानी जानकी सुकुमारि ॥

अबहम आइयां बेगलै सादियां सुनि आज।
दाढ़िनि दाढ़ियां वेह मनूपेखि श्रीमहराज॥
दाढ़ी बीनबजांदा हुःवा। नकडेस्वर गाँगाहुः
वा॥ दाढ़िनिन चन्दी गांदी हुः वा॥ ललीं
परसद के जांदी हुः वा। सांडी वेगलै हुः वा॥
तेरा राज स भलाभला हुः वा। गुनी हुनी दै
आंदे हुः वा॥ तेमन भांदे पांदे हुः वा। ऐसीं
दीदान दिलैदा हुः वा॥ फिरनहिं जांचन
जांदा हुः वा। फिरि नहिं जाँचदावेसाणूदान
इसडादेत॥ कहदे देवते वेधानि वेदान इस घर
लेत। धनिघर प्रगटि आवे अवह्लादिनी घर
आज॥ सदके जादियां वे तुझपर दानदे मह-
राज। महराजा दानदिलाँदा हुःवा। जाचजोंई
सोइयांदा हुः वा॥ दैदे हस्ती घोड़े हुःवा॥

जरी पाटके जोड़े ह्वः वा । मणि मोंतियो दी
माला ह्वः वा ॥ दैदे शाल दुशाला ह्वः वा।
दैदे गांव अनेका ह्वः वा ॥ गावै सहित बिवेका
ह्वः वा। जीवो लली नृप दानी ह्वः वा ॥ जै
रामसदा कुरवानी ह्वः वा ॥ ३६ ॥

झूलना यकताला ॥

सीरध्वज को सध्वज बैठे महाराज अजिह्वः
वा है ॥ देव सभा राजत है लीन्हे सब साज
अजिह्वः वाहै ॥ बड़ेबड़े भूप आये बैठे सबठ
ह्वःवा ॥ वेद पढ़ै चौबे अरु ओझा मिलि भट्
अजि ह्वः वाहै । ढाढ़ी अरु भांड़ अछे नाचत
नट्ट अजिह्वः वाहै ॥ देखिदुनी रीझिगये दा
दिवा खट्टअजिह्वः वा है । कड़े दिये मोत

दुशालनके पट्टआजि ह्वैवाहै। हितजै राममगन भये सियानामरट्ट अजिह्वः वा है ॥ ३७ ॥

इतिश्रीरामलला श्रीजनकलली जन्मउत्सवपदावली संग्रहबसन्तऋतुवर्णनम् ॥

अथग्रीष्मऋतुपद लिख्यते ॥

रेखता ।

छबीलेलाल रघुराई। तुम्हैं बिन विथातनछाई॥ देखो वो चन्द्रमुखनीको मिटावोतापममजीको । लखनि तेरी लगतप्यारी । होत नहिं हृदय तेन्यारी ॥ अलककुंडलनकी हलकैं कपोलन मध्य मे झलकैं ॥ अधरपर चलतयकमोती ।

कसक मम हृदय में होती ॥ जड़ाऊ शीशपर चीरा। करत मम हृदय अति पीरा । पिताम्बर काछनीकाछेबनेहौ लाल अतिआछे॥ किंकिणी मधुर अतिबोले । श्रवण को लेत मनमोलै ॥ मालमुक्तान छबि वरषै । मन्दमुसुकान चित करषै ॥ सुनौदशरत्थ के प्यारे । होत मम हृदय तेन्यारे ॥ नीरबिनु मीन गति जैसे । तुम्हैंबिनु रामजू तैसै ॥ सुनत प्रिय रामचरण बानी । दरशदेव आपनो जानी ॥ ३८ ॥

लैगयोदिल्चाह चषनमें । अजब अदाअल-बेली देखाकर डारादियो दिल्दार दुखनमें ॥ सांचीबात समुझु सजनी नहिं काजर ह्वै कुलका निरखनमें । मिलेबिना महबूब मिलापी का मन

कछु निकसैरी झँखन में । युगलानन्य शरण नेवछावरि होयगई ललचौंही लखन में ॥ ३९ ॥

खेमटा ॥

अजब गरबीला साजनहो इत आवै अदा दरशावै। मुरिमुसुकाय बोलाय लेत मन है याके कछुहुनर अजब ॥ बारक नजरि परत परचावत वह बावत कुलकानि अदब॥ युगल अन्यअली न रही सुधि सुनि सुन्दर बर बीनबजब ४० ॥

घुँघुरा रेवार जियलियारे॥देखत दिल दरम्यान दखलादिया जादूसा कछु कियारे ॥ पियापिय रटत अटत आरत है निशिदिन तलफत हियारे। सियाराम शम्शेर लगीउर घायल पारि केति त्रियारे ॥ ४१ ॥

क्याबुलाक अधरनपर हलकै ॥ जबते दृष्टि परी या मूरति तबते छिनपल परत न पलकै। किधौंअसमसर सर सन्धान्यो की सुखमाकी सरवरझलकै ॥ सियाराम पियमुख मयंक पर मनहुँअमीकी मूरति छलकै ४२ ॥

कवन सहै चितवन की चोटै। करत बेहाल ढालनाहिं मानै गिनत नहीं कोटनकी ओटै॥ अँगअँग दंग अनंगरंग बसि घायल परी भूमि पर लोटै। सिया राम हियवेधि नयन शरजानि लिया जन पति के होटै॥ ४३॥

लगन लगी तब कौन करै डर। सब संशय मिटि जात अलीरी बदन विलोकि मीत अपने कर। बूंदअकाश पपीहा चाहत यदपि भरे अ-

गम सरिता सर ॥ करुणा भरे खरे घरवारे रोवत सती कबहूँक चढ़ैसर । लोक लाज कुलकानि जबैलौ तबलौ प्रेमरसी नफसी गर। प्रेम सखी वालि झगरा कवन है यहतन बेच्यौं अवध छैलकर ॥ ४४

खेमटा ॥

मेरामन लैगा राघौयार । दैकै तनिक दीदार ॥ मनहारिलैगाछैं टांकन दैगा छैला छली हुसियार ॥ बाटचलत हँसि हेरि फेरि दृग डारिदिया जियजार । को एहै अपनोही गवैहैं अवधनगर की बजार । रामसहाय देखायदरश रस लूटत राजकुमार ॥ ४५॥

रागपीलू।

तनिक हँसिहैरी राजकुमार । बुधिबौराय हेराय जाय मन रहत न देहसम्हार ॥ दूरिहिते जाकेतन ताके मदनभयो, जरिछार ॥ सो त्रिपुरारि भिखारि वेषधरि अलख जगाइ द्वार ॥ स्वपनेहु निकट जात नहिं कबहूं माया मोह विकार । सो भुशुंडि शिशु चरित बिलोकत फँसे प्रेम कीजार ॥ सुनत बोल बिनुमोल बिकानी शारदसी हुशियार। राम सहाय जाय सोइ जानै अवध नगर की बजार ॥ ४६ ॥

हगन लगि जायगेरी राजिव नयन । मैं जो कही जनिजा वहि मारग मानबावरीबैन ॥ रतनारे कजरारे प्यारे अनियारे अति पैन । चित

वतही चुभिजात अचानक करतहिये बिचऐन॥ जो काहू के मनअटकैंगे खटकैंगे दिन रैन। राम सहाय रूप बिनुदेखे फिरि न परेगीचैन ४७

सजनीरी मरती हौं बिरह दरेरन। प्रीति लगाय पिया बिछुरनभयो कौन दिनन के फेरन॥ लेत उसांस सुसुकि करमीजत सुनत पपिहाकी टेरन। मधुर अली बिसरत नहिं छिनपल राम कुवँर की हेरन॥ ४८॥

कब मिलिहौ दिलखोल लाल सांवरेहो। होगई हरद जरदबिनु देखे सुनि बिनुप्यारे बोल॥ लोग कहैं सबभई बावरी झाँवारे मदन कलोल। प्रागदास यह पीरतुम्हैं नहिं राज कुवँर अनमोल॥ ४९॥

राम पियारे सुधि आनि लेरे । ब्याकुल होत चित्ततन भीतर बिरह अगिनि लगि जानिलेरे ॥ राजकुमार चतुर नट नागर जो जिय होयसो छानिलेरे । राम सखे दे दरश दृगन भरि इतनी अरज मेरी मानिलेरे ॥ ५० ॥

प्यारी लागै हो ललन तेरे बदनकी लोनाई । जुलफन युत सुनु अवध सांवरे नयनन रही है समाई ॥ वारौं मुकुर कपोलन ऊपर अधर बिम्ब अरुणाई । राम सखे छिनपल बिनुदेखे जिय नहिं परत रहाई ॥ ५१ ॥

खेमटा ॥

राजा रहना भला रघुनन्दन । मैं तो तेहारी खुशी में खुशहौं और नहीं कछु चहना ॥ सुख

सोहाग दुख दरद बिरह को जोइ सहावो सोइ सहना।कहर मेहर दोउहाथते हरि अपना अपना लहना ॥ मारौ चहौ जियावौ प्यारे आशिक को क्या कहना। रामसहाय राज दरवाजे परा फकीर बिरहना ॥ ५२ ॥

अथ खसखानेपद ॥

कवित्त ॥

तेरीसौ प्यारी तेरे अंगसुकुमारनपै केते सुकुमारन के अंग मृदुवारे देत। तेरेसुनि आगम निकुंजमान मंदिर सों आली अलबेली पलकन मग झारेदेत ॥ मालती के हार हीरन अनुराग भरो जीवन कृपाल तनधन वारे देत । प्रेम सों

बिलोकै पाय पंकज से पौरही से पांवड़ो करत प्यारो पीतपट डारे देत॥ ५३ ॥

रेखता॥

उसीरी बँगला नीको केलिघर काम रमनी को। करौं तारीफ मैं कैसी बनी रचना ललित जैसी॥ सकै नहिं शारदा गाई निरखि सुधिदेह बिसराई। चहूँदिशि नहर भरआई॥ फुहारे की अवलि छाई। तहां सियलाल सुखसाजै॥ निरखि छबि मदन रति लाजै। अली कलगान करती है। पियाको चित्तहरती है॥ छुटीसोंधी अतर लपटै करत गुंजार अलि दपटै। पवन शीरी सुखद बहती॥ अतन की द्युति काम हरती। अलीकर कनक पिचकारी। गुलाबी छिरकती बारी॥

कुसुमकी गेंद रचिलाई। परसपर मारती धाई॥ रसिक पिया निरखि रसपागे। अतनु की मदन तन जागे॥ बिहँसियक नागरीहेरी। अरुण कल-कंज करफेरी॥ ५४॥

ध्रुपद॥

आजुरची कुसुम कुंज सखियन अति सुघरता सों ल्याय ल्याय बिबिधि रंग कुसुम सुवासमें। नील पीत हरितस्वेत अरुणतेऊ बिबिधि भांति चहूँओर चहूँकोर अंग अवकासमें॥ तामधिरचि कुसुम सेज राजत सिय राजिवदृग कुसुम शृंगार सजे सखी आस पासमें। कोऊ चमर छत्रधारि कोऊ करै अलाप चारि धिधिकट धुधुकत मृदंग रसिकरस विलास में ५५॥

आजु राजै रामसिया कुसुम निकुंज मध्य कुसुमकी सेज रची बिबिधि बिधि बनावकी । पिया जूके कुसुम पाग वागासुठि कुसुमही को पटुका डुपट्टा ताको छोर छबिछावकी ॥ सिया जूकी कुसुम सारि कंचुकी कुसुमहीकी पीतम निज हाथ रचो हित चित चावकी । भूषण क्रीट चंद्रिकादिलसै कुसुमहीके निरखत छबि अरस परस चितवनि रसभावकी।सखियां बहुगान करत तानकी तरंगछाइ आनँद भरिलेत गति मोरनि मृदुहावकी । रसिक अली रामसिया अद्भुत विलास छबि उपमा अनन्त काम रतिहू न दावकी ५६ ॥

पूर्वी रागगौरी ॥

राजत कनक भवन मधि रघुबर जनक दुलारी। चपलासी चहूँओरसहचरी सेवत चतुर सुघर सुकुमारी ॥ भूषण बसन परसपर सजि अँग लखत मुकुर कर धारी । अरसपरस दंपति सुख लखि यह रसिक अली बलिहारी ५७ ॥

मोहन मधुर मधुर तानगाय प्यारीको रिझावै। सप्तस्वर तीनि ग्राम यकईश मुर्छना तेहि मिलि जंत्र बजावै ॥सुनि सुनि सिया मन मुदित होत अति सो लखि पिय सुख पावै। रसिकअलीतहां रस भरि तानन करत गान गुनवारी ५८॥

ठुमरी ॥

बागमे बिहरै राजकुवँर फुलबँगले छये

नये वे। जुही नेवारी औ गुल्क्यारी वे खसखस
की लागी टटियां वे॥ सुख शीतल गरमगये वे।
सिया रसिक अलि अतर गुलाबों लै सुख सों
सींचत है सखियां मनभावत भये भये वे ५९॥

फुहारा छुंछररररर रसित सुगधंगसना॥सना
नानी गुलाबसोकलके पंखासों मारुतसररररऔर
कपूर घना। हेमहेमालेसो सीरोसिरोनीर हौद
भरायो गम्भीर केसरि चन्दन घसि घोलिघोलि
तर अतर बना॥ खसके बँगले में पलङ्गपै बि-
राजे हैं दोऊ प्रमोदबनकी कुंजविना। अलीन
गमकोऊ बजत बीन झननननन बारिबूंद
सनननननन सी परसिक आलि निरखि अलि
मगनमना॥ ६०॥

राजत रथपर राजदुलारे। निरखि नरेश सुरेश जुहारे॥ रथरमणीय विचित्र सवांरे। रतन तेज तेहि लखि लघुतारे॥ शीतल कोटि कलानिधि वारे। लखिशोभा शारद बिधि हारे॥ अस्वैसे जगतीतल न्यारे जोते श्यामकरण कुलवारे। सियारसिकअलिसजि असवारी पुष्प बृष्टिभइ द्वारे द्वारे॥ ६१॥

इतिश्रीग्रीषमऋतु पदखसखाना इत्यादिकसमाप्तिः

अथबरषाऋतुझूलनपद॥

सोरठ॥

झूलन पधारो जी हमारो राज। कारीपीरी घटा घन उमड़िघुमड़ि आये बिजुली चमकत

आज॥ सुनिबानी सरसानी प्यारे चले झूलनके काज ।कृपानिवास अलीकी जीवन गरे लागी तजिजाल ॥ ६२ ॥

मलार ॥

झूलतसीताराम हिंडोरे। गौरश्याम अभिराम मनोहर रतिपति को चित चोरे ॥ नीलपीत वर बसन लसनितन उड़त सुगन्ध झकोरे । सहचरि हरषि झुलावत गावत छबि निरखततृण तोरे ॥ मन्द मन्द मुसुकात छबीलो रमकन थोरेथोरे।अति सुकुमारि अग्रकी स्वामिनिडरपि गहत पटछोरे ॥ ६३ ॥

रमझम रमझम सावनको। प्रेम संदेशा मनभावनको ॥ घमघमघम गरजै अरजै पिय सिय

प्यारे दिन सुख आवनको। दमदम दामिनि दमक दशौ दिशि चमचमचम उर लावन को ॥ कृपानिवास रामरमनी रम सरयुप्रलिनपय पावन को ॥ ६४ ॥

आयोरि सहेलिहेसावन झमकै । कारीघटा में अटा चढ़ि राजत गौरघटा घन घन घमकै ॥ घुरिघुरि गरजत लरजत प्यारी ज्यों दामिनि दुरि दमकै। दादुरमोर चहूँदिशि बोलत बूंद नन्हि नन्हि छमकै।प्यारीलगत प्यारे सो पावसपीतम केसँग रमकै। जैतिप्रसाद निवास स्वामिनीपिय नयनन में चमकै । ६५ ॥

सजनी झूलत श्यामाश्याम।सरयूतीर प्रमोद बनमें रामसिया सुखधाम ॥ रतन जटित वर

कनक हिंडोला शोभित जग अभिराम । सावन श्याम घटा झुकि आई जहँ तहँ दमकतदाम ॥ बोलतमोर चकोरसों कोकिल चातृकरटत ललाम बजत मृदंग ताल सारंगी सखि गावत गुण ग्राम ॥ चन्द्रकला सुभगाजु झुलावत निर्तत सहजाबाम । अवध अली प्रिय प्रीतम छबि पर वारिय रतिशत काम ६६ ॥

प्रीतम पिय प्यारी झूला झूलतहो । रतन जटित को बनो है हिंडोला झूलै प्यारी जनक दुलारी हो ॥ अँग अँग भूषण सजे हैं मनोहर पहिरि कुसुमरँग सारीहो । हरि सहचरिके प्राण जिवनधन झमकि झुलन परवारी हो ६७ ॥

झूलत सिया राजिव नैन । रतन जटित

हिंडोलना सखिराम सुख के ऐन ॥ श्यामरँग पर गौर झलकत दामिनी घनगैन । मैथिली रघुबीर शोभा निरखत लज्जित मैन ॥ नामप्रिय कोलेहु नागरि ज्यों सखिन मन चैन । आनकी नाहिं लेत सुख सों देति लोचन सैन ॥ परस्पर झूलत झुलावत बदन मधुरे बैन । अवधपुर निज केलि दम्पति अग्नि आनँददैन ६८॥

झूलत रामराजिव नैन । जनकजा सन सुख बिराजत तड़ित ज्यों घन गैन ॥ अतिहि झूलत मनहिं फूलत रहसि तोषत मैन ।लालके उरलागि शोभा निरखि करषत ऐन ॥ परस्पर अनुराग दोऊ बदत मधुरे बैन । जालंधरन निरखि बनिता अग्र उर सुखदैन ६९ ॥

झूलत सिया बल्लभलाल। लाल कंचन खम्भ सुन्दर ललित डाड़ी लाल॥ लाल भूषण अंग झलकत लसत चीरं सुलाल। लालदोउ के बदन सुन्दर अधर बीरीलाल॥ लाल सखियां लाल गावतसब झुलावत लाल।मोर हंस चकोर कोयल भणत बाणी लाल॥ लाल रीझत लाल ऊपर परस्पर सबबाल। कृपानिवास सुलाल जोरी निरखि नयन निहाल॥ ७० ॥

झूलत नवल दशरथ लाल। सरयू तीर प्रमोद बनमें लिये सँग सियबाल॥ हरित मणि मय हेम डांड़ी रतन खंभ बिशाल। गुही रेशम डोरि मोतिन पटुलि जटित प्रबाल। लखि बिचित्र हिंडोल बिमला नचति दैकर ताल। हरिहारिमुखदेत झोका परी छबिके जाल। प्रेमबश

लखि गही पीतम बोलि बचन रसाल ॥ रामसखे बिलोकि या रस को न होत निहाल ॥ ७१ ॥

प्यारीजू चलो न झुलावै ।सरयूतीर हिंडोलना वे कुंजनि रंग रमावै ॥ पहिरि कुसुम रंग चूंदरी हो काजर दृगन लगावै। कृपानेवासी कुवँरि छबीली छबिसों छकि मुसुकावै ७२ ॥

सरयू सोहनी किनारे रसिया झूलन पधारे। घनगरजत झुकि बादरीहो रिमिझिमि परतफुहारे ॥ भूमि सोह अनुराग लागिनी बागनि मोर झिगारे।कृपानिवासी अवधबिहारी प्यारे नयनन सो न बिसारे ॥ ७३ ॥

झूलत दोउ रघुबर रंग भरे। दशरथसुत अरु जनकनंदनी कनक भवन पधरे ॥ रतनजटित मणिबनोहैहिंडोरा कंचन खम्भ हरे।विमलादिक

सखि रीझि झुलावै उर आनन्दभरे ॥ युगल रूप की शोभा निरखत रतिपति लाजभरे । यही पियूष पियत जन तुलसी नयनन चोक करे ॥ ७४ ॥

कजरी ॥

देखो देखो रघुबर झूलै जनकलली । यक-ओर ललिझुलै यकओर लालन अतिसुन्दर अतिरमक रली ॥ नीलकमल से नवललाड़िले नवलिबनी जैसे चंपकली।तरुतमाल छैलरसिक वर शीलमनी सियवर नवली ७५ ॥

रेखता ॥

झूलै सोइ लाड़िली सिया । झुलावै लाड़िले पिया ॥ बदन द्युति दामिनी लाजै । निरखि

छबि नयन भरि आवै ॥ चहूँ दिशि आलि गुण गावै।चँवर कोउ बिजना ढुरावै ॥ राज मिथिलेशकी बेटी।अमित रसरूप सों लपटी ॥ अँग अंग रंग सुखदानी।नवल रघुनन्दन मनमानी ॥ रामसखी लेत बलिहारी॥ जिवन जग जनकजा प्यारी ॥ ७६ ॥

देखो देखोरी झुलत मिथिलेश दुलारी।संग बहिनि अमित सहचरि सगरी ॥ नवबयस नवल अँग रँग चुँदरी। दृग अञ्जन तिलक हलनथ बेसरी ॥ झोका अरस परस देति मति अगरी। शुभ तड़ित चमक बरसत बदरी ॥ लखि मोहि रमा शारद गौरिरतिरी। लखि नवल पिया के बड़भाग फलरी ॥ ७७ ॥

चलो देखन जाउरी झुलत रतियां । रतना-
गरि तट कुंज मनोहर फूलि रहे बहुद्रुम जतियां॥
रघुनन्दन श्रीजनक नंदनी भूषण बसन सोहत
अतियां । साज समाज निरखि नयनन छबि
रसिक प्रिया हुलसत छतियां ॥ ७८ ॥

मलार ॥

ये दोउ झूलत रंग हिंडोरे । दशरथ सुतअरु
जनक नंदनी चितवनि में चितचोरे ॥ नान्हि
नान्हि बूंद पवन पुरवैया फुहिया परत थोरेथोरे।
हरि हरि भूमिलता झुकिआईं सरयू लेत हि-
लोरे॥हयदल पैदल रथदल गजदल कोटबनै चहुँ
वोरे । उपबन बाग बिहँगम बोलै कोकिल मोर
चकोरे ॥ बाणी बिमल सखी सब गावैं अपनी

अपनी वोरे। नागरि नाम लिवावत पिय को सियजू हँसी मुख मोरे॥ बाजा बजनलगे चहुँ दिशि ते अधिक सघन घन घोरे। नितंतनटी तहां लघुमोहन ताताथेइ तानन तोरे॥ ७९॥

खेमटा॥

हिंडोरे झुलै श्री जानकी जान। प्यारी संग समाज अलीगण लेतनई नइतान॥ श्याम बदन पर जुल्फै छोंड़े मंदमंद मुसुकान। युगल प्रिया तनमन धन वारै करत निछावरि प्रान ८०

किशोरि झूलै रघुबर राजकिशोर। बनप्रमोद कुंजन द्रुमझुकिरहि श्याम वरण परगौर॥ बो-लत कीर कोकिला चातक मोर करत अति शोर

घुँघुँरारी अलकैं मुख ऊपर शीलमनी चित चोर ॥ ८० ॥

हिंडो रे होलि बाढ़्यो रंगअपार। सावन तीज सोहावन हेली झूलत राजकुमार ॥ गृह गृह तेबनिता बनि आईं गावत राग मलार। कृष्ण रंग सबहिलिमिलि ठाढ़ी प्राणकरतबलिहार ८२॥

नस रसरंग तिहारी झूलनमें। योवन जोरमरोर फेरदृग नाह नेहरसहूलन में। मृदु मुसुकाय कहत सिय पियसौं धरि अंसन भुज मूलन में। गाय बजाय निरखि अलि दंपति सुख संपति रस फूलन में ॥ ८३ ॥

राग मलार। झुलत हिंडो रे दोऊ झोका देत। नीलाम्बर पीताम्बर उरझ्यो बाढ़्यो अधिक

सनेह ॥ लचकि मिलावत मचक कमरकी अधर सुधारस पीतम लेह । दंपति छबि पीवत बख्तावर ऊलरि आयो मेह ॥ ८७ ॥

ये प्यारे राज दुलारे झोका दीजे सम्हारि । जिय डरपाति सिय अति सुकुमारी मनमें लीजै बिचारि ॥ सुन मनमोहन मधुर झुलावत कहत अली बलिहारि । सुधा मुखी सुनि श्याम श्याम घन घनवरसत सुख बारि ॥ ८८ ॥

लावनी ॥

हिंडो रे झूलत जब प्यारी । प्यारो आय झुलाव रिझावत छबि पर वलिहारी ॥ बजत पग नूपुर रसकारी । अंजन खंजन नयनसैन मुख मोर हँसनवारी ॥ गाय आलि दंपति रतिचारी । देख

पिखसुखसींव भागकी मूरति तनुधारी ॥ ८६ ॥

सोरठ ॥

रँगमानी जूरंगमानी थारि रमक झूलन सुख दानी। श्याम सुँदर मोरि छतियां धरकै नैनन बरषत पानी ॥ मदन मनोरथ उपजत हियसों पियसों सिय बतरानी। कृपानिवासी हँसि रस सानी रघुबरउर लपटानी ॥ ८७ ॥

धीराझुलौजी धिराझुलौ मोरि छतियां धरकिकाइहूलो। बारछूटिगै हारटूटिगै गिरि- गयो अंग दुकूलो ॥ रामरसिक रस सहजकलीजै नाजुकता समतूलो ॥ कृपानेवासी कहत छबीली छैलमया जनि भूलो ॥ ८८ ॥

मोरे मन में उठि छै उमंग रंग झुलावोंगी

नयनारो करि सुभग हिंडोरा युगल छैल पध-
रावोंगी ॥ सुभग प्रीति झोकादे श्यामा रहस
लाड़िली गावोंगी। चोप चाकरी खरी जनावो
भावन चाह नचावोंगी ॥ प्रेम लड़ाय छमाय
चूक सब गाय बजाय रिझावोंगी। कृपा
निवास बसो सियपिय उर अनत ठौर नहिं
जावोंगी ॥ ८९॥

सबहिं झुलावोरि हिंडोरे ॥ अलबेली सिया
प्यारी। सावन तीज सोहावन राजे ॥ बिविधि-
भांति के भूषण राजै। अंगन प्रति कोटिन
रतिवारिय प्राण करौं बलिहारी ॥ कमला बिमला
चँवर ढुरावैं गान कला सुमृदंग बजावैं। चन्द्र-
कला कछु तान सुनावत लाल देत करतारी ॥
सुख समुद्र श्री जनकदुलारी रघुनन्दन की

प्राणपियारी । युगलप्रिया तनमन धनवारी वारिवारि फिरिडारी ॥ १० ॥

तेरेझूलन की बलिहारिहो सुनु रघुबरप्रिय लाड़िले । तुर्रा जोर बन्यो चीरन पर तैंसिबनी अब सियसारीहो ॥ दै गलबांह बैठि प्यारीसँग कोटिमयन रतिवारीहो । हितजयराम निरखि दम्पति छबि बारबार बलिहारीहो ॥ ११ ॥

रागमलार ॥

लाल लाड़िली के संग हिंडोलना में झूलौ होहोहो । तुमझूलौ हम झमकिझुलावैं गावें सु बजावैं ताल मृदंग ॥ यह सावन मनभावन सरसत बरसत मेघ अभंग । दादुर मोर चकोर शोर शुभ सरयू तरल तरंग ॥ अँगअँग

भूषण साजि अवध पिया पहिरो चोल सुरंग।
सुधासुखी मुखमासुखदीजे कीजैजीत अनङ्ग १२

ग़ज़ल ॥

झांकी घनी बांकी बनी दोउ झूलनाझूलैं
आखों में सुरमा शारिके दिलकी हरैं सूलैं ॥ मुख
चन्दकी शोभाकहैं तनमन खबर भूलैं। सखियां
चहूँदिशि देखिके अँखियां कुमुद फूलैं ॥ पहिरे
हैं मणिमोतिन जड़े गहने गजब खूलैं । कपड़े
सुधा बदनी सुरंगी सजे सुख मूलैं १३ ॥

लावनी ॥

झमकिझुकि झूलत सियप्यारी। प्यारी झमकि२
झुकि निरखत हँसनि नेहवारी ॥ सावनी सारी
मनहारी हारहमेल गरे गजमुक्ता चन्द्रहारधारी।

छबीली छबिमें मनवारी शीलमणी रघुराजभाल की भागलख्यो भारी ॥ १४ ॥

प्यारे दोउ झूलैं हो तीज सोहावनी । नेह भरी सखियां सबगावत तान लेत मनभावनी ॥ झोंकादेत डरपि गरलागत लालबटीउर चावनी । जयराम हित रंग में भीने अधिक बनी यह सावनी ॥ १५ ॥

प्यारे दोउ झूलैं हो रंग हिंडोलना । नेह भरी सखि रमकिझुलावैं अपनी अपनी टोलना ॥ रतनजटित के खम्भा डांड़ी मरुये सुभग बने ता मोरना । जयराम हित रसमें भीजे लाललिये प्यारि कोरना ॥ १६ ॥

मलार ॥

सियाजू हो झूलत फूलभई। फूली फूली फूल हिंडोरे अनकूली अधिकई ॥ पीतम प्राण झुलावत छबिसों शोभा निरखि नई। रूप रसिक रस छकेहैं परस्पर मानत नहीं तृपतई ॥ १७ ॥

खेमटा ॥

झूलैं झमकि झुलनवा लाल लली। बन उपबन निन्दत नन्दनबन पूरिरह्यौ फलि फलन फुलनवां ॥ सुर निरखति अति दशन अधर धरि छबि कवि भारति जितन तुलनवां। कोबिद तनमनभूषण वसन सबकरत निछावरि उपर हुलनवां ॥ १८ ॥

चंचरीक ॥

सरयूतट निकट कुंज झूलन छबिछाई। मणिन रचित खम्भ रुचिर डांड़ी मरुवा मयारचौरसी विचित्र चारु बनिक की निकाई ॥ गरजत घनननननन पवन चलत सननननन दमक दमक दामिनी कला विचित्रताई । गिरत प्रबल धारबारि चहुँदिशि घनकी अँधारि करत मोरशोर भारि चलियेचितलाई॥चलियेजू सियजू आप प्रीतम तुव जपत जाय मेरी सुनि ललित लाय शीश लौं नवाई । उठी मानि विनय प्यारि सखियन उर सरस चाँरि वारिवारि जात रसिक झुलन रसिकाई ॥ ९८ ॥

रागमलार ध्रुपद ॥

ये आलि सावन तीज सलोनी आजु लोने पिया प्यारी सँग झूले मनभावन। चहूँ दिशि ते घनउमड़ि घुमड़ि आये चपला चमक छबि छावन। विपिन प्रमोद द्रुमलता महिहरि आई॥ बोलत चकोर मोर चात्रिक सोहावन। बाजत मृदंग वीण झीने स्वरगावैं आलि रसिक रसीले चितचावन ॥ ९९ ॥

हिंडोरे कुवँर कुवँरि झूलैंमेरो हियरा लखिफूलै अतिहि सुघर उपमा नाहिं पैयत बर भलोइ कहत कबि मतिन लहत जहँ चिन्तामणि भूमि द्रुम झूमि झूमि रहि छबि श्री सरयूकूलै॥ अतिहि सोहाइ माइ अवध लोगाइ आइ तेहि समतको

रति रंचक न पाइ निज परिकर सम तूलै। गावैं सुबजावैं अनुराग को बढ़ावैं राग रागिनि जमावैं प्राण प्राणनि रिझावै ॥ लाल चंद्रकला दिशि हेरि अति सुखपावै सिय प्यारी सुखमूलै। झूलाको लगाइ मणि जटित प्रबाल भाइ द्रुमन सोहाइ पटुली लगाइ सुखदाइ रेशम रजुमूलै॥ युगल प्रिया झुलाइ दंपति रसिकराय झोकादै मुदित मन सुखन समाइ अनुपम छबिछारति कामको लजाइ ये दोउ रसिया दिन दूलै॥ १०० ॥

झमकि झूलत सिय रघुराई बिमल बरषाऋतु बनि आई। कोटि रतिकाम से ललाम रसधाम रामसिय घनश्याम सियदामिनि दमकता में अति अभिराम गजमोतिन के दाम सुबुलाकन

की छबिछाई ॥ दादुर चक चकोर भूषण को शोर आलि भूरि भूरि मोरसी नचाति चित चोरि चोरि तोरि तोरि तान गाई। मेंहँदि नखनबिर बधुनकीभीर धुनि मधुरमृदंग घनगरज अनंग जल बरषि बरषि हिय करषि करषि सुधामुखि सरिसरसाई ॥ १०१ ॥

सवैया ॥ छन्द ॥

सहिनाहिंसकै रबिराम प्रतापगयो नभ भाजत कांपि रह्यो । बड़वानल शेश समुद्र दुरे शिव तीसरनेत्रमें ढांपिरह्यो ॥ बिष सिन्धुदुरे तिनसर्पन में डरिकाल घरीन में नापि रह्यो । लखुरामचरण रघुबीरप्रताप अखंड सुअंडनिब्यापि रह्यो १०२ ॥

रघुनन्दनको यशछाइ रह्यो सगरोजगउज्वल

देखिनयो । पय सिंधुगयो कहँइन्दु गयो बिधि इंद्रकोबाहनकाहभयो । कैलाशकहां मुकुतामणि बज्रमुकंबु कहां सरहंसगयो । सब लीनभयो अस राम चरण जस सिंधु सबै सरि लीलि लयो १०३

कजरी ॥

प्यारी चलो न झुलन पियरसंबरसै।तुमदामिनि बरण पियघन दरसै । यह लषण सरस छबि दृगतरसै ॥ दै सबहिं ललित सुख बिधुकरसै । चालि ललिजु झुलन सुनि सखि बचसे ॥ लखि नवल प्रिया के बड़भाग फलसे ॥ १०४ ॥

कजरी ॥

प्यारी झुलन पधारो झुकिआय बदरा । सजि भूषण बसन आँखियन कजरा ॥ मानकि जिय

काहेको सुखलीजिये अली तूतौ परम सयानि मिथिलेश की लली। देखो अवध ललन पिय आगेहिं खड़े रसबरषै सुधामुखि जब पांयन परे॥ १०५ ॥

धीरे धीरेरी झुलावो मेरि प्यारि ललना। सिय अति सुकुमारि झोकाभारीभलना ॥ यह रूपकी निकाई बिनु देखे कलना। नयना चाहत हैं आलि सबं लागै पलना ॥ श्रमसीकर सोहाइ बेसरि मोति हलना। कहै सुधामुखि गाय पिय मनछलना ॥ १०६ ॥

सोरठ ॥

हिंडोरे आलि झूलैं युगलकिशोर। अरस परस रस छके छबीले रति मनमथ चितचोर॥

जनकलली रघुलाल सलोने घन दामिनि द्युति जोर। विपिनि प्रमोद मही हरिआई द्रुम फूले चहुँ ओर॥ बोलत बिहँग सोहावने सखिचातक मोर चकोर। तैसेइ सजल जलद नभ छाये बिज्जुलि चमक चहुँओर॥ शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह बाढ़्यो मदन मरोर। छूटे कच तन कम्पत प्यारी प्रीतम रंग झकोर॥ सूहे बसन सोहावने तनमचकन छेरतछोर। नाचत गान करत पिकबैनी छाय मृदंग टकोर॥ रसिक-अली लखि नवल रूप रस नहिं लागत दृग कोर॥ १०७॥

राघोजी वाकी झूलनि में मनलीता। बांकी सखी झूलावनवारी बांकी सोहैं सँग सीता॥

बांकेनयन सयन अतिबांके सुरमा दीता। कृपा-
निवास वकाइ सोरुचि जादू सा कछुकीता १०८

मनलागा वे राघोजीके झूलना । झूलत
ललित मोतिन के तारा नव योबनदा हूल-
ना ॥ कृपानेवासी तनमन वारै फहरै पीत
दुकूलना ॥ १०९ ॥

रागमलार ॥

जानकी तीज हिंडोरे सोमबट झूलति पिय
रँग भीनी। ओढ़े अरुण झीन सारी तन इंद्र
बधू छबिछीनी। आपु न गाय गवावत पियको
हँसि हँसि तान नवीनी ॥ रामसखे लखि
यह प्यारी सुख भइ रति अति मति हीनी ११०

कजरी ॥

चलो देखन जाउरि झूलत झुलना । श्री सरयू तट कुंजमनोहर कुसुम जहां बहुविधि फुलना ॥ रघुनन्द श्री जनकनन्दनी लखि छबि रतिमनसिज भुलना ॥ श्यामगौर बर बरण सरस अति घनदामिनि उपमा तुलना। नखसिख भूषण बसन सोहावन अंग अंग ललित सुघटि खुलना ॥ नवल प्रिया छबिदेखि मगन भइ लाज कानि गति सुधिकुलना ११॥

खेमटा ॥

तेरि झमक भूलन पखारी रे। झूलनजोर मोर अँगनकी चितवनि अति अनियारी रे ॥ पानखात गावत स्वर मधुरे छबि उमगत लग

प्यारीरे। कृपानिवास दास चरणनकी अवध विलास बिहारी रे ॥ ११२ ॥

तेरि बांकी झूलन परवारि रे। झूलन जोर हिये विच कसकै मानहुँ हूल कटारि रे ॥ कृपानिवासदास चरणन की रहिगइ ठाटि कि ठाटि रे ॥ ११३ ॥

झूलैं श्री जानकि वल्लभ रंग हिंडोलनावे। रग पटुलि डांड़ी चौकी छत्री अद्भुत मणि तोरनावे ॥ कंचन खम्भ जटित मणि माणिक मरुवा वेलन सोहनावे ॥ तापर मोर कीर गण राजत बोलत है चितचोरनावे। रंग भरी झूलत पद गावैं ललना गण चहुँओरनावे ॥ युगलप्रिया रसिकनमनउमगत सुनत मृदङ्ग टकोरनावे ११४

रामरसके हिंडोरे श्याम सिया संग झूलो जिझूलो जि झूलोजी ।रसके खम्भ रसीली डांड़ी रसबस सरस हिंडो रे ॥ रसबस पावस बरसावत रसके बनेघनघो रे । कृपानिवास रसीली सखियां रसबस करत निहोरे ॥ ११५ ॥

रेखता ॥

हिंडोरा हेममय राजै बिबिधि मणि साज सब साजै ॥ हरित बर भूमि सुखदाई । लता चहुँओर रहिछाई ॥ रौसकी पांति प्यारी है। फुहारे अमित जारी है ॥ कलोलैं कहर सरयूकी। सुखद अतिसीय अरुपीकी ॥ सारिका सुवा औ मोरैं विहँग बहुभांति कर शोरैं ॥ निरखि छबि लली लालन की । झूलनिकल अली मालनकी ॥ उमँगिसो

रंग नहिं भावैं ॥ जोरि चष मन्द मुसुकावैं। सखी सियराम बलिहारी ॥ देखि छबि भई मतवारी ॥ ११६ ॥

हिंडोरे झूलतीप्यारी। झुलावैलालहितकारी॥ चहूँदिशि आलि गुण गावै। मौज पिय पासते पावै ॥ घटा नभ सजल रहिछाई। बोलत है मोर सुखदाई ॥ दामिनी दमकि अति सोहैं। पपीहा बोलि मनमोहैं ॥ बूंदियां बरसती नीकी। भावती सबन के जीकी॥ दादुरैं बोलअति प्यारी बगन की पांति छबि न्यारी॥ लोगाई अवधकी निरखैं। हरषिकै सुमन सुर बरषैं ॥ सखी सरयूके सुन प्यारे। हगन ते होहुमति न्यारे॥ ११७॥

सिय पिय झूलै कदम जुड़िछाहीं। सियपिय

झूलै सखिय झुलावैं कनक भवन के माहीं ॥ गौर श्याम अभिराम सलोने मंदमंद मुसुकाहीं। अलिगण गान तानमृदु सुनि सुनि रमकि झुलन सरसाहीं । बांके राय निरखि मृदुजोरी बार बार बलिजाहीं ॥ ११८ ॥

ग़ज़ल ॥

सावनके दिनमें शौकसे झूला झुलाइये ।कुल काज लाज साज सबीबिधि भुलाइये ॥ सजि के शृँगारहार हजारों उमंगसों । सजनी सखी सहेली सलोनी बोलाइये ॥ तजिके फिकर्फरेब फरक सबसो होयके । उत्साह चाहचैनकी खाने खुलाइये ॥ श्रीजानकी जीवन की अदा ऐसको लखिके। सबतौरलता हेमछटा छबि छुलाइये ११९

झांकी घनी बांकी बनी दोउ झूलन। झूलैं।
आंखो में सुरमा सारिके दिलकी हरैं सूलैं ॥ सुख
चंदकी शोभा कहे तन मन खबर भूलैं। सखियां
चहूँदिशि देखिके अँखियां कुमुदफूलैं ॥ पहिरे
हैं माणि मोतिनजड़े गहने गजब खूलैं। कप-
ड़े सुधाबदनी सुरंगी। सजैं सुख मूलैं ॥ १२० ॥

झूलत तेरे नयन हिंडोरे। श्रवण खंभभौंहैं
बनिहैं मयारैं दृष्टि करन डांड़ी चहुँओरे ॥ पटु-
ली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूपरस
जोरे। बरुणी चमर ढुरत दुहुँ दिशि ते लरलटकत
फुंदना चित चोरे ॥ दुरि देखत अलकावलि
अलिकुल लेत सुगंधन पवन झकोरे। कचघन
आड़ दामिनी दमकत भौंह इंद्र धनुकी अनु-

हो रे ॥ थकित भये मंडल युवातिन के युगताटंक लाज मुख मो रे । रसिक अली रस भाव झुलावत बिबिधि कटाक्ष लानतृण तो रे ॥ १२१ ॥

चलो सखी बनप्रमोद को सजि के झूले ललि लालन बांकि रमक झूलैं । दम्पति गोरे सांवरे कसलागै मनो घन विच जैसे दामिनि दमक । भूषण अँग अँग अति छबि पावै नूपुर किंकिणि मञ्जीरन छमक दोऊ होड़ा होड़ि मिचिकन लेहीं उठै छटा बहुविधि मणि गणचमक ॥ १२२ ॥

झोका दीजै सम्हारिके मोरीसारी न लटकै । या सारी मिथिलाते आई चांद सुरज दोउभटकै॥ कृपासखी इनकी चंचलता नयननमें खटकै१२३

श्यामा साजन झूलन चलिये । लहलहि ललित लतान के बितानतने नवल निकुंजमिलि रंग रलिये ॥ मृदुरव मृदंग गरजि घन सुनि सुख दामिनि की दमक झमक अलिये । नूपुर मंजीर शोर चात्रिक चकोर मोर बोलत मनोहर मदन दलिये । सुनि सिय बानि सुखसानि मनमानि लाल सुरंग बसन साजि छबि छलिये ॥ आलि सिय रसिक सुजान प्राण प्यारि दोउ झूलन नवल कुंज आय मिलिये ॥ १२४ ॥

तिल्लाना ॥

पिय प्यारी पीतम झूलैं । अवधनगर मनभावन सावन सरयू कूलैं ॥ चहुँदिशि अलीखड़ी गुणगावैं मधुर मधुर स्वर वीन बजा-

वैं । तानलेत गति नचत छबीली लखि स्वर तिय गति भूलैं ॥ अतिहि सघन घन गरजत घुमरत बोलत पपिहा नचत मोर करि शोर चहूँदिशि कै श्याम गौर समतूलैं । प्रियासखी लखि मुदित झुलावैं अँगअँग नव छबि दरशावैं जीवन धन सियराम प्राण प्रिय लखि लखि सखि हियफूलैं १२५ ॥

झूलन पर बलि बलि जादियां । सियजू के सोहै सुरंगी सारी रघुबर दे मन भादिया ॥ विमलादिक चहुँ ओर बिराजैं झोंकादै मुसका दियां । मधुरअली मधुरे स्वर गावैं दंपति छबि पै बिकादियां १२६ ॥

झूलन आई सियजू रघुबर रंग हिंडोरे । झूल-

न आई तीज सोहाई पिय भरिलेत अकोरे ॥ अतर गुलाब की उठत झकोरैं रमकन थोरे थोरे। मधुरअली मधुरे स्वर गावैं देत हैं प्राण अकोरे १२७ ॥

चलो बागोंके बीच रचो रंगहिंडोलना। जैसी उमड़ घुमड़ सावन की ॥ घुमड़ि रह्यो घन घोरना। हरि सहचरि के प्राणजीवन धन पिय प्यारीको चित चोरना १२८ ॥

झूलैंहो हो पिय प्यारि दोउ आजु नवरंग हिंडोरे। झोंका देत परस्पर दोउ मिलि उड़त नीलपट पीत दुकूले ॥ ललित केलि गावत दुलरावत श्रीसरयू के कूले। हरि सहचरि के प्राण जीवन धन निरखि निरखि सुंदर चित फूले १२९ ॥

रमकन रंग मचो अवरे हिंडोरेमहेलीरी। दशरथ सुत अरु जनकनंदनी इन मेरो मनहिं अचो ॥ पिय श्यामल घन दाम लसत सिय भूषण बिबिध रचो । अलि रघुनाथ सखीगण चहुँ दिशि मानहुँ चित्रखचो १३०॥

ध्रुपद ॥

तेरी छबि प्यारे आजु मेरी तौ हरी है लाज जैसोई परत बूंद भीजत सुरंग पट । गरजि गरजि मेह कीन्हें रसकेलि नेह उमड़ि घुमड़ि आयो पुनि पुनि सोमबट । चौंधी बीज चहूँ कोण शीतल चलत पवन बोलत चकोर मोर सुंदर सरयू तट । रामसखे मन लोभा देखि के

पावस शोभा उठी हीयका मरोर मिलिये नागर नट १३१ ॥

मलार ॥

रघुबर जनक दुलारी। सरयू तीर महलन की खिरकी बैठे जन दुखहारी ॥ सुरँग बसन भूषण मणिवारे सेवत किंकर बंधु सुखारे। गावत गंधर्व नर तन धारे नृत्य अप्सराकारी। चलत पवन सननननननन बजत जंत्रझननननननन लेत तान तनन मननन उचरत राग मलारी ॥ चहुँदिशिते घन उमड़ि घुमड़ि करि गरजतँ चमकत बरसत झरि झरि। बढ़त उमंग अनन्द सुभग सरि हरीलाल सुखकारी ॥ १३२ ॥

ध्रुपद ॥

नये भवन नये राघव नये बसन नई बयस। नये क्रीट कुण्डल नई है कलंगी । नई रमनी सीय नये रसबोलत नइनइ केलि करत रसरंगी॥ नये बन नये घन नये तृण अंकुर नई सरयूजल उठत तरंगी । नवल प्रमोदबन बिहरत पिय प्यारि नइ नइ प्रीति प्रभाव अभंगी ॥ १३३ ॥

सिय प्यारी सुकुमारि हिंडोरना में कांइझूलै राज । अगर चंदन को बनो हिंडोरा मलयागिर को पटा । रेशम डोरि पवन पुरवैया यह सावन की घटा ॥ प्यारी झूलै लाल झुलावैं भली बनी सजनी । उड़ि उड़ि अँचरा परत भुजनपर डरपत शशि बदनी ॥ सावन सुभग श्रवण बट छाँहियां

श्रीसरयू के तट। अवधबिहारीजू के झूलनाहो निरखत अग्रछटा १३४ ॥

अथ श्री कृष्ण जन्म बधाई पद ॥

ख्याल ॥

नन्द गृह बाजै माई आनँद बधाई । मथुरा जन्मलियो हरि जगहित देवकी कोखि जुड़ाई॥ लै बसुदेव चले आधी निशि यमुना उमँगि सोहाई। चरण छुवाइ गये यशुमति गृह सौंपि भुवन सुखदाई ॥ भादौं कृष्ण अष्टमी रोहिणि योग लगन मन भाई। गृहबर बार द्वार द्वारन प्रति चौकैं चारु पुराई ॥ बंदनवार कलश ध्वज चामर जन्म सोहिलो गाई। नेवछावरि तन मन धन दंपति जग जीवन फलपाई॥ लखि सुख

सिंधु उमँगि उर छिन छिन मणि गण बिपुल लुटाई । लय लय गोद मोद भरि शिशु मुख निरखि हरषि बलिजाई ॥ श्रीगोकुल घर घर पुर चौहट सुख सुखमा छबि छाई । चिरजीवो यशुमति नँद नंदन युग युग बजत बड़ाई । नित नवकेलि किलोल लोल चित चतुर चोरि दधि-खाई ॥ ज्ञानाअलि ग्वालिन गोबिंद छबि निरखि हरषि हियलाई ॥ १३५ ॥

जन्म बधाई आजु जगत जीवन जरी । हरि लीन्हो अवतार नंद गृह शुभ घरी ॥ यशुमति यश तिहुँलोक नगर नभ छाइरह्यो । सुखशोभा शौभाग्य सदा आनँद भरी ॥ श्रीगोकुलकी नारि सोहिलो गावहीं । निरखि सुवन बलिजाइ

सोहागिनि लखि खरी॥कंचनथारन साजिसुमं-
गल करधरी। ज्ञाना अलि बलिहारि सबन की
मतिहरी॥१३६॥

रेखता॥

झूलैंबसुदेवनृपलालन।यशोदा गोदकरिपालन
कलोलैंकेलिलखि प्यारी॥मगन मन मुदित मह-
तारी॥ निरखि मुख चंद बलिहारी। निछावरि
प्राणधनवारी॥ देवकी धन्य जगजानी। सदा
बसुदेव पटरानी॥ कियो हरि प्रकट सुखदानी।
नंद आनंद रससानी॥नित्यनव केलि कलसा हैं
किलकि हँसिहेरि मनमोहैं॥ परी सुखसिंधु मुख
जोहैं। सुकृत फलपाय अस कोहैं॥ जिये बृज-
राज सुतलोने। लगैजानि दुष्टतिय टोने॥ ज्ञाना

आलि निरखि दृगकोने । रही थकि हारि मन मोने ॥ १३७ ॥

ठुमरी ॥

यदुनन्दन जबते जन्म लियो तबते यशुमति गृहसुख बरसैं । नितलालन पालन नेमप्रेम निछावरि तनमनधन करसैं॥जन यांचक बाचक गुणगायक नट भाट भले द्वारन दरसैं । दै दान मान धन धामकाम परिपूरण करि ज्यौंजल धरसैं ॥ धन जीवन जगबृज ग्वाल बाल । जिन के संग हरि तनमन परसैं ॥ जिनके हित शंभु समाधि करैं निशिबासर दरशन को तरसैं । युग युग जग जीवो नन्द महरि बड़भागिनि भाव भरी सरसैं ॥ ज्ञाना अलि और न चाहकछु जनि

दूरि करौ सियबर घरसैं ॥ १३८ ॥ ❁ ॥ ❁

नंद नंदन आनन्द कंद चंद छबिछाइरही गो-कुल गलियां। सँगग्वाल बाल यमुना कि पुलनि खेटक मिसअसुर दलदलियां॥ दधि माखन घर घर खात फिरैं छलखानि छबीले अतिबलियां। बृजनारिन को मन मोहिलियो दै रूप माधुरीरस भलियां॥ नितनइ नइ केलि कलोल लोलअन-मोल निरखि गतिमति हलियां। ज्ञानाअलि यशुमति मोललियो बिनदाम बिकै हरि रसअलियां॥ १३९॥

अथजलबिहार पद॥

मलार॥

नवारा घुंम घननन्नन चित्रम चित्रबना।

बनानानकरिया० ॥ मंडल मंडल फिरि फिरि घुम घनननननन चित्रम चित्रबना । नावरि नावरि भिरि भिरि भिरि मांझि प्रवीन प्रवीन ॥ हेलनि मेलनि ठेलनि खेलनि बंजानि डांड भना ॥ सरयू गंगा के मधिमें विहार रामजूकरैं सखा सु वंधुसंग में कथिक तनय तानै भनै । बजतयंत्र झनननननन लेततान तननननन । हरीलाल रूपसभा लखि मंगना ॥ १४० ॥

इतिश्रीझूलनजन्माष्टमीजलविहारपदावली संग्रह बरषाऋतु वर्णनम् ॥

अथ शरदऋतु रासपद लिख्यते ॥
राग ईमन ॥

करत दोउ अरस परस शृंगार । गौर

वरण तन राजकुमारी श्यामल राजकुमार ॥ धरत चन्द्रिका क्रीट शिरनपर पहिरावत उर हार। अँखियन में अञ्जन आंजत दोउ सान धरत सरमार ॥ नकबेशरि मोती झु सम्हारत दरपन बदन निहार। रामसखे या युगल रूप-पर बारबार बलिहार ॥ १४१ ॥

रागहमीबड़ोतार॥

अहो आलि देखि रामसिय रासमंडल को बनिठनिके दोऊ आवत। शीश चन्द्रिका क्रीट मनोहर करलिय कमल फिरावत ॥ ओढ़े नील पीतपट अंगन हँसि हँसि पान न पावत ॥ रामसखे दम्पति रस भीने मोमन को अति भावत ॥ १४२ ॥

आनि सियराम रासमधि राजै। गावत दोउ विमलादि सखिनमिलि नृत्य वेष अति साजै॥ बन प्रमोद कुंजन द्रुम फूले जन्त्र तन्त्र बहु बाजैं। रामसखे लखि यह दम्पतिरस रति पतिहू जिय लाजै॥ १४३॥

आजु बैठे रास कुंजमें रामरसिक रँग भीने। सोहत सखिन मध्य उड़शसि ज्यों नटनि वेष तनकीन्हे॥ गावत हँसत अजड़ जड़ मोहत प्यारी गलभुज दीने।रामसखे लखि नवलमाधुरी भयरतिपति दोउदीने॥ १४४॥

अहो पिय प्यारि दोउ खेलत प्रमोदबन। सरयूतीर कुंज कुंजन में छिन छिन ढुरि प्रगटत परसत तन॥ श्रमजल बिन्दु विराजत मुख

पर मनहुँ कमल पर लसत वोस कन। रामसखे लखि सिय नागर छबि नवल सखी वारहिं तन-मन घन ॥ १४५ ॥

निर्तत सब सखियन मिलि प्यारो। सबके बदन निहारत पोंछत रघुकुल दीप उज्यारो ॥ लखि पिय को अतिही कोउ तियपर प्रेम मदन मतवारो। रामसखे सिय छपी रीसकरि तजि अंजन दृगकारो ॥ १४६ ॥

छूटत नाहिं न प्यारे मोपै आजु तौ जानकी मान। मैं अपनों सो करि पचिहारी वै हठ चढ़ी निदान ॥ आपुहि चलि रिझवो नृप लालन तुम सब विद्या जान। रामसखे सिय मिले जवन-विधि सो अब करिय सुजान ॥ १४७ ॥

सुनु सिय हे मम वचन दरश देखाउ प्रिय सुखखानी । तव बिरहे ब्याकुल मृगनैनी ॥ त्रिभुवन सुन्दर निज पटरानी ॥ कोउसखिबने खोजलहि सुगुने बोली मुदित आइ मृदुबानी । रामसखे छिति जायक कुंजनि बसति यकांत लुकानी ॥ १४८ ॥

रागगारोकान्हरोबड़ोतार ॥

प्यारे सो मिली प्यारी । तज्यो मानसुनि राम बिनै मृदु भयोआनँद अतिभारी ॥ गावहिं सखी बजाइ बाजने जयजय बदन उचारी॥राम सखेलागीविहरनअब पियसँगजनकदुलारी१४९

रागबागेश्वरी कान्हरोबड़ोतार ॥

रुनझुनु बाजैरी नूपुर पग नृत्यत अवध

बिहारी । तैसेइ बजत यन्त्र तन्त्रनामलि रंग मच्यो अति भारी ॥ थेइ थेइ करत सखी विमलादिक थकिरह्यो लखि नभचारी । रामसखे सिय कहति रीझि अस भले जु लालबिहारी१५०

रागईमन ॥

रामाप्यारो लालनाचै नाचै नूपुर बाजै छूंम छूंम छुंम छननननन । रामसखे वारहिं जनकसुता लखि प्रान ॥ ताताथेइ ताताथेइ उघटत तननन ॥ १५१ ॥

रागपर्ज ।

नटत राम नागर नागरिया। चन्द्रकला कलवीन बजावै गावत चन्द्रकला सहचरियां ॥ रघु-

नन्दन तोरत मृदुतानन सियजू स्वरन भरत मनहरियां। सुनिसुनि थकितभये सरयू जल मुनिजन सकल भये बावरियां ॥ प्यारी अँस पिया भुज दीन्हे पिय अँसन प्यारी भुजधरियां। मनहुँ तमालल‌ता कुंदनकी श्यामलगौर परस्पर अरियां ॥ सुधि आवत जब ब्याह समयकी रासमँडल विच लेत भँवरियां । सो सुख सिंधु रूप के ऊपर रतिपति कोटि वारिने करियां॥ बन प्रमोद बिहरत नानाबिधि अवध ललन अरु जनक दुलरियां।रामसखे लीला दम्पतिरस लखि लखि दृगन प्रेम उर भरियां ॥ १५२ ॥

चंचरीकछंद ॥

रहसमण्डल सखि मंडल राजै । बाजैंबहु-

बिबिधि बजहिं मिलहिं आलि अवाजैं ॥ नचत हँसत बदन लसत छटकिफंद मदन फँसत तकत चन्द्र मान नसत अद्भुत छबि छाजै । अकनि बकनि तकनि झँकनि झुझकनि उझकनि सुझकनि ॥ थकनि रुकनि हकनि लुकनि अप्सरा लखि लाजैं । सुखनि लहनि छोरनि गहनि हलनि करनि कछुक कहनि हँसनि रसनि फसनि विश्वनाथ लसनि साजै ॥ १५३ ॥

देखो सखि अति आनँद रासरच्यो । रामचन्द्र रजनीछबीछिटकिरही शरदचांदनी ॥ बहुसखि मंडलाकार नित्यगान स्वरसम्हार नृत्यतरघुनन्दन मिथिलेश नंदनी । कंचन मणिलसत भूमिनृत्यत पद चपलघूमिनूपुर छमछननननन छमकछंदनी॥

कमला विमलादि तान रागा नुगादिगानकरहिं रागरागिनी कला कलंदनी । चंद्रकला बीन। मुर्चंगधुनिमृदंग मधुरअपरसखिसितारतारतरत रंगनी।।ताधिग धिग् ताधिग् धिग् धिग् धिग् धिग्ताधिग् धिग्॥ धृकट धृकट धिधिकट धिधि कट प्रबंधनी ॥उघटत संगीतराग ताल मुर्छनादि ग्रामहावभावपानि मुरनिं नयन खंजनी । राम चरणयुतसमाज मेरेहिय में विराज यह विहार नित अखंड रसिक मंडनी ॥ १५४ ॥

अथसांझीपद ॥ गौरी ॥

बिबिधि सुमन मय सांझिबनावत। रघुनंदन अरु जनकनन्दनी अरस परस दोउ मुद उपजा वत पियाके चित्र सियारचि सियके रचि पीतम

विपिनादि सोहावत। रसिक चित्रदोउ लखत परस्पर आँनद प्रेम उमँगि उरछावत ॥ १५५॥

रागजंगला ॥

रघुनन्दन अरु जनक कुमारी। शरद भवन बैठे सुख आसन सखियन कौ सुखकारी ॥ मणि मयसांझी रचित नवल दोउ बहुप्रकार मुदकारी। सिय के चित्रचारु पीतमरचि पीतमके रचिप्यारी॥ सियके चित्र देखन रघुबरगय पिय के जनक दुलारी। रसिकमिले भरि अंग उमँगिउर प्रेम दृगन चलेवारी ॥ १५६ ॥

राग चचरीक कल्यान ॥

देखो सखिशरद रैन सुन्दर छबिछाई। निर्मल दश दिशा व्योम छिटक निकर अंसुसोम ॥

तारागण जोति तोमविथुरित छबिपाई।कुसुमित नवबन विशाल।।चम्प बकुल तरु तमाल ।। अलि बाल कलितमाल बलिरतलुभाई ।बोलत खग बिपुल बैन पुंज पुंज मधुपगुंज ॥ बहत सुखद त्रिबिधि बात आनँद उमगाई।सखिन सहित सीयराम बैठे ऋतु शरद धाम ।। लज्जित रति कोटिकाम सुखमा सरसाई। लीन्हे सखि चमर छत्र ब्यजन बिबिधि सौंजहस्त सांझी रचि खेलैं तहँ जानकी रघुराई ।। सीय जू की चित्र चारु पीतम सुठि लिखि सवाँरि पियके लिखि सिय सुधारि रंग बिबिधि लाई। लिखत चित्र बिबिधि भांति लखत मगन अति अनंद निरखि निरखि युगल रूप रसिकावलिजाई ॥ १५७ ॥

कनकपीठ राजत पिय प्यारी । आश्विन शुक्ल बिजयदशमी सब आई रघुबरनारी ॥ बिबिधि उपायन सिय रघुबर को दै दै करत जोहारी ।आई बहु लोकपकी बनिता भेंट बिबिधि कर धारी ॥ धरि धरि भेंट करत बन्दन सब रसिकअली मुदकारी ॥ १५८ ॥

इतिश्रीबिबिधरसबिलासअरुसांझीकेलिकलोलयुगलमाधुरी छबि छटावर्णनोनाम शरदऋतु त्रितीयः ॥३॥

अथ सियबरब्याहपदबंदना लिख्यते॥

राग गौरी ॥

बनरा सलोनो माई रघुबर राज । माथे मौर खौर चंदन को अँग अँग भूषण साज॥गजरथ तुरंगनचावत आवतराजत राजसमाज॥कृषणराम

धनि भाग सियाजिको बरआयौ शिरताज१५९

रंगीले रामा अँखिया लागी थारे रूप ॥ काह करौं कछु बसनाहिं मेरी बूड़ि गई रसकूप॥चेटक लाइ लगाइ लियो चित चतुराईमें अनूप । कृपा-निवास लगन छूटैनाहिं सुनिय अवधकेभूप१६०

गभड़ूवे जुलफौंवालेहो । तेड़ाविहुश्न अमल अलबेला चश्म मसाले प्याले ॥ दरदवंदीदा दरद मिटावो मति बतलाओ प्याले ।कृपानिवा-सि पै मेहर करौ पिय सुनु दशरथ दे लाले१६१

सोरठ ॥

हो केसरिया बाना रामथा सो लागोम्हारो निहरे॥थां॥तौलटकम्हानो प्यारिप्यारो लागैमन मोह्यौजिथारे सेह रो ॥ धनुष पस्यौरहौ जनकके

कोई लोगकरै सब चेहरो।कृपानिवासि पियवोर निवाहो पकरयौ क्षेजिथारो छेहरो॥ १६२॥

रघोजी बना जिवना रंगीला।सोहनलागदा मोहनानु प्यारो हो सांवल साजन चगला॥ बसेरहो दिल्दार छवादेव मोरि आंखि नदीबिच बँगला। कृपानिवास रामछबि ऊपरकाम किया कँगला॥ १६३॥

बना श्याम तुझपर वारीहो। तेरी सूरति दिल बिच बसदी चटदी इश्क खुमारी॥ जरकश पेंच झुके अलबेले जुल्फे जालमकारी। कृपा निवास कहैं पुरनारी सेहरेदी छबि न्यारी॥ १६४॥

बनि ठनि ठाढ़ेदोउ श्याम सलोना वे। जैसी बनी सियरूप लाड़िली लाजत सोनावे॥ मिथि-

ला पुरनरनारि सबनपर डारत टोनावे । युगल प्रिया छबिसुधापियन को अँखियां दोनावे १६५

तेहि चितवन मनलागावे बनरा । जबते आये अवध नगरते मिथिला कीरति जागावे॥ हौ तुम सुन्दर श्याम सुभग बर सिय बनरी रसया गावे ॥ युगलप्रिया यह युगल भावना रसिकन मन अनुरागावे ॥ १६६ ॥

सुन्दर राज कुमार हो प्यारे बनरे । यातेरी छबि सदन बदन पर वारिय कोटिन मारहो ॥ पान खान मुसुक्यान हरनमन कुमकुम खौर लिलारहो ।माथेमौर मकर जुलफनयुतउर मोतिन के हारहो । काजर दृगन पगन जावकलखि लाजत समर श्रृंगार हो ॥ बागो लाललसनि

पनरथ की रहत न देखि सम्हार हो। अँखियन ते न टरोअब टारे जीवन प्रान अधारहो ॥ राम सखेतुव रूपबिकी हमछांड़ि सकल घरबारहो १६७

आलिरी सियाको बनरा अजबरंगीलो। माथे मणि मौरसोहै कलँगी झुकीलो। लंबे लंबे बार चिकनारे घुँघुरारे कारे॥ कजरारि आंखैं नाशा मणिचमकीलो। सांवरे वरन तन अति सुकुमार ताई॥ अंग अंग सुखमाकी अनि अटकीलो। गुमराई गरुवाई गुनताइ छाइदृग शीलता सनेह ताई अति दरशीलो ॥ भूलिभूख प्यास गइ लाजहू सकाइ माइ। निशि दिनमनरहै छबिको छकीलो। मनहीमें प्रणकरि तनअरपन कियो जानत सुजान चित हित अधिकीलो॥ रसिक

अली गुरुजन जानिबात यह कहँलो छिपावों नेह नंदउमगीलो ॥ १६८ ॥

लावनी ॥

बनोसिय प्यारी को बनरा कि बरबस मोहि लियो मनरी । मोर शिर सोनेको धारीमहामणि जटित तिमिरहारी ॥ करन छबि मेंहंदीकी धारी मेहावर चरणन चित्रकारी ॥

दोहा ॥

कंकनकी कमनीयता कही कौनपै जाय । अलक झलक लखि खलक ललक उर पलकन परी सोहाय ॥

गरे गज मोतिनको गजरा । चलनि चितवनि चितगति चोरी बचन की रचानि लाज

तोरी ॥ धामके दाम काम छोरी गर्वतजि बिवस भई गोरी ॥

दोहा ॥

हँसनअसी मुखम्यानते सुधा मुखी सितधार। कटि कामिनी कतलकरी इनदशरथ राजकुमार॥ रँगीली अँखियन में कजरा १६९॥

मोरि परम सोहागिनि जानकी। प्रगटभई कुलदीप मनोहरि प्यारी पीतम प्रानकी॥ बाल मृगीसी बड़ि बड़ि अँखियां गति गजराज लजानकी। दामिनि कोटिबदन तन झलकत बोलत अमृतवानकी॥ सूर किशोर विचारत मुनिवर होहु बधू कुलभानुकी॥ १७०॥

वरणकुल क्यों बदल्यो होबना। मायतुम्हारी

पतिवरता छै जाके सत्यपना ॥ सुनतहि गारी लगत श्याम तोहिं पिताज्ञु गौरतना। सियासखी थारो रूपदेखि म्हारे जिय संदेह घना ॥ १७१॥

रेखता ॥

कहत है जनकपुर बाला सुनौ नृपअवध के लाला। तुम्हारे रूप अनुरागी लाजमैं जगत की त्यागी ॥ देखि तुवबदन की शोभा। हमारे नयन मन लोभा ॥ तुह्मै बिनुकछू नहिं भावै॥ पलक यककल्प समजावै। हमै को संगमें लीजे। अधर रस प्रेम सो पीजे ॥ सखी सरयूके सुनु प्यारे। कबहुँ नाहिं होहु मन न्यारे॥ १७२॥

निरखि क्यों न लेरी राजकुमार। बांकी भौंह नयन रतनारे घूँघरवारे बार ॥ बिश्वामित्र को

यज्ञसुफल कियो गौतमनारि उधारि। ये आये बड़भाग सखिन के धनुष चढ़ावन हार॥ हमरे जान जानकी कारण भूपलियो अवतार। सीय रामकी जोड़ी कान्हर जीवन प्राणअधार १७३।

लावनी॥

आज़ु हम देखे सिय प्यारी। किये सिंगार बारहौं भूषण बिहरत फुलवाई॥ कहौं क्या बेंदी छबि भारी। निकस्योचन्द्र बिदारि मारिऋतु मोहन भवन्यारी॥ अजब शिरचोटी लटकारी। गोरे बदन नागिनी बैठी मोतियन की धारी॥ मनावत गौरीसो नारी॥ श्याम सखे बिन देखे बालम ठठमतवारी॥ १७४॥

सखि सुन्दर राज दुलारे नृपवारे श्यामगौर

मनमुदित निहारे ।शिरपर चिरा बांधे करशर धनुकांधे मोतिन की मालाउर नयन रतनारे ॥ कुंडल कपोल सोहैं भुजबल बाज मोहैं। मणि गण भूषण किरनि रबिवारे ॥ पुरजन नरनारी देखि छबि छकिहारे । रामचन्द्र चन्द्रमा भूपति सबतारे ॥ तोरो है धनुष लाला सियउरमेली माला । जन हरिलाला गुर चरण निहारे ॥ १७५ ॥

पूरबी ॥

जनकपूर जनकपुर हे हे सखि ऐ लेदोउ भैया। श्यामल गौर किशोर मनोहर कोटि मदन छबि अंग । करशर धनुष कुंडल श्रुति शोभित मुनिवर लियेयकसंग ॥अवधनरेशनृपतिमणिदशरथयश गावत श्रुति चार। रामलषण उनके दोउबालक

लोग सब करत विचार ॥ बड़े बड़े भूप चूप ह्वै बैठे चाप समीप न जाहिं। सो धनुराज कुवँरकैसे तोरि हैं सियजु कहत मनमाहिं ॥ सोरहो सिंगार बारहौं भूषण सिय जू अँग अँग धार। रंग भूमि विहरत सखियन सँगनख सिख सुभग अपार ॥ तेहि छिनराम धनुष जब तोरल चहूँ दिशि जय जयकार। सो सुनि जानकी मनहुँ हुलसाति डारि गरेविचहार ॥ सीय योगवर विधि को बनावल कहत जनक पुर लोग। नंद लाल यह मंगल गावल नीकबनल संयोग १७६॥

अथश्रीजानकीबिवाहमंगललिख्यते॥

शोभित सीताराम कनक मण्डप तरे। शिर सोनेकोमौर मंजु मुक्ता गरे परसत अमल कपोल कि मुक्ता मोलके॥ सुन्दर लोचन लोल कमल मानो भोरके। सुरंग चुँदरिके निकट पीतपट छाइरह्यो। मनहुँअरुण घनमध्य चपलता ह्वै रह्यौ। सिय भूषण प्रति बिवरामछबि उरधरे॥ मनहुँ यमुन जल मध्य दिब्य दीपकबरे। राम भुजाके निकट सियाभुज यों लसै॥ मरकत मणि के निकट मनहुँ कंचन कसै॥ रामभये घनश्याम सियाभई दामिनी। मुनिजन चन्द चकोर चकितभइ भामिनी॥ रामभये तन गौर सियाभइ सांवरी। शारदसी बुधिवन्त बधूभई

बावरी ॥ पुष्पन बरषत मेघ मेदनी थरहरैं । होत जनकपुर ब्याह रामभांवरि फिरैं ॥ सुरनर मुनि आनन्द सुमन बरषाकरैं ॥ शिव ब्रह्मादिक देव मुदित जय जय करैं । श्री जनक लली जीको रूप शंकर हृदय धरैं ॥ ब्रह्मारूप निहारि इन्द्र पूजाकरैं । यहछबि युगलकिशोर कि मुनिजन ध्यावहीं ॥ लिखिलिखि बिमल बिनोद वेद यश गावहीं । जो यह मंगल गावहिं गाय-सुनावहीं ॥ परसि सियापद पद्म परमपद पावहीं । तुलसी सीताराम सहित उर आनिये। राम भजन बिनु जन्म बृथा करि जानिये १७७

इतिश्री ब्याहमंगलविविधविनोदकोहवरकेलिवर्णनोनाम पंचमहिमषट्ऋतुपदसंग्रह ॥

अथबसंतधमारहोरीपदलिख्यते ॥

रागश्री ॥ ध्रुपद ॥

आगम बसन्त सब नारि रतवन्त तामेंलीन्हे शर चाप श्याम कंत लागो वहकन । कीरगण तुंड ऐसे मंडित सिंगारकीधौं शेषमुख ज्वालासे पलासलागे चहकन ॥ काम कैसे दूत धूतभ्रमै भृंग फूलन पै जहां तहां रत्नागिरि शृंगलागे महकन । रामसखे बिरहिनि करिहूकै उठनलागि बिषकैसि फूकै पिक शत्रुलागै कहकन १७८॥

कोकिलाकी कूक सुनि हियमा उठतहूक । तैसोई सनेह भरो फूलौ प्रमोदबन ॥ नृत्यत कलापि और भौंरा अलापै राग उड़त गुलाल

लाल फूलनपराग सन। मचो है बसन्त ऐसो रतनजटित पंथ सरयू के तीर तीर लता जाल कुंजघन ॥ देखि अति रुचिराई कामहू करी चढ़ाई। रामसखे प्यारे बिनु भयो है छोभमन१७९

प्रेम सखिकोकिलान कावसी पुकारतीहै मन्द-गति मारुत गयन्दन को साजहै।ठौर ठौर बाजि से विराजैं वृक्ष किंसुक के पैद से गुल्मलता भ्राजत समाज है ॥ स्यन्दन रसाल जामें रथी रति नाथ बैठो फूल सर धनुष हाथ भट शिर-ताज है। महाराज रघुराज रावरे मिलन हेत सेना चतुरंग संग आयो ऋतुराजहै १८० ॥

पीतम रे मोराहा ऋतु बसन्त कह्यो आवन। सरस सुगन्ध सबी बन फूले कोइली लागी

गावन ॥ नये नये पल्लव झालरि आये चतुर चितन को चोप बढ़ावन ॥ नव जोबन बलिहारि भेट लै आई सखि लाल रिझावन ॥ १८१ ॥

मधु ऋतु आई रे भौंरा कहिबो संदेसो मेरो जाय। रतिकर बिकल अवध सुन्दरबिनु छिन छिन कल्प बिहाय ॥ चलिये लाल जनकपुरते अब युवतिन के हित पाय। रामसखे उर तपनि बुझैये सरयू तट रसप्याय १८२ ॥

को बचिहै इन बैरि बसन्त सो आवत जोबन धूम मचावै। बौरतही बावरि करिडारि भये विषबाग रसाल कहावै ॥ ह्वै है करच करेजनके कवि कोकिल बैन सुनावैं। बीर किसौ रघुबीर

बिना उड़िजैहै जु प्राण गुलाल उड़ावैं १८३ ॥

खेलत बसन्त सिय रसिक लाल । संगसोहै नोखी नवल बाल ॥ मृगमद कुमकुम गरवर गुलाल झोरिन अबीर सुठि सुमनमाल ॥ बाजत मृदंग मुरचंग ताल । गावै नागरि आगरि पद रसाल ॥ सियराम अली लखि भइ निहाल ॥ १८४ ॥

खेलति बसन्त कुंजन कि खोरि मिलि नवल कमल दृग जोरिजोरि । मुसुकात मधुर तर थोरि थोरि ॥ तकिमारै नयन सर बोरिबोरि गौरी उत उचरैं जय किशोरि ॥ उच्चरैं पिय जयजय रंगडोरि । सियराम अली स्वामिनि कि वोरि ॥ पिय पै रंग डारत दौरिदौरि १८५॥

राजत बसन्त बन डगर बगर । सब नगर अगर कर कीच सगर ॥ नरनारि करै रुचिरंग झगर । सोहैं सरयू के कूल कगर ॥ लियफूल छरीसौंधै सवारि । करि कौतुक कोटिन देत तारि ॥ खर श्वान शृगालनकोंई सवार । जनु तनधरि ऋतुपति संग मार ॥ लैलैकिझपकि पिय पकरि लीन फगुवा मगाइ सिय जानदीन्ह । मचि मोद महा रह्यो मंजुमाल सियराम अली लखि भइ निहाल ॥ १८६ ॥

दोहा ॥

ऋतुपति आयो हे सखी पियनाहिंआयो पास ।
बढ़न लगे दिनरैन अब घटन लगे अँग मास १
बिरहिन बैठी बीच में बीचि सिंधु की जोर ॥

सियाराम पिय बांह गहि खैंचो पनया तोर २

रागधमार ॥

लाड़िली मान न कीजै होरिके दिनन में कौन तिहारी बान।बरस बरसको खेलि छाड़ितुम बैठिहौ भौहैं तान ॥ मान सिखापन लेहु हमारो कहत जोरि युगपान । मधुर प्रिया पियपास चलो उठि रुचिर केलिकी दान ॥ १८७ ॥

पकरि सियलीनो अहो पियराम कटिपट सखियन छीनो । होरी समय रहस मंडल में मनभावो सोई कीनो ॥ मुखसों मसलि गुलाल मैथिली आंखिन अंजन दीनो । रामसखे लखि अवध सांवरो प्यारी के रँगभीनो ॥ १८८ ॥

रंग होरी रे मचाइ रंग होरि रे । भरि पिच-

कारी मेरे ऊपर डारीसारी अँगिया केसरि रंग बोरिरे ॥ बनप्रमोद में आइ अचानक बांहगहत बर जोरिरे । रामसखे फागुन के मिसकरि करत फिरत रसचोरिरे ॥ १८९ ॥

श्याम मुख लाल गुलाल लगी । नीलकमल जनु प्रकट प्रातरवि अरुण किरिनि जगमगी ॥ अलकैं घूमिआइ मुखऊपर केसरि रंगरँगी । खट-पद बधूआय अंबुजलौं अरुन पराग पगी । रूप अनूप बिलोकत आली नेहसनेह तगी ॥ दंपति अली रूप निधिसीते पिय अतिरूप पगी १९०

रँगभीने राजकुमार छैला होरीमें । संगसखा अनुरागभरे सब मोहन को अस गोरी में । कृष्ण राम धनभागजानकी ताकेबँधेरसडोरी में १९१॥

सोरठ ॥

रसिकन होरी के मिसलूटी । नित रस रास रसिकपिय यांचत आज मरजादा छूटी ॥ उमगे अंग अनं । छकीले जोटि परस्पर जूटी । प्रगट निपट रस पलि झपटिसों चोली की कसट्टी॥ रति अनुराग फाग खेलनि में लाज मथनियां फूटी । कृपानिवास बिलास भवनकी ऐसी बात अनूठी ॥ १९२ ॥

अबरँग भीजिगई रघुबंशी दूलहो । सूहीसारी केसारिरँग अँगिया नइ लइ बिगारि गई ॥ कंपत तन योबन मदछाकी छलकारि बांहगही । जन भगवान उराझि दोउ अँखियां सुरझत कठिन भई १९३ ॥

अरी मैं कहाकरौं कित जांउ सखीरी लग्यो दृगराम गुमानी । दिन नहिं चैन रैननहिं निद्रा करकत छबि उरआनी ॥ उत लालन डफबजत जुझाऊ इत गुरजन कुलकानी । अंग अंग गर-म्यो रँगपीतम कासों कहौं बखानी ॥ जुलफैं छुटी मारनी मुखपर चितवनि जन विषसानी-मोमग आइ फागुखेलत नित नागर वर सुख दनी । रामसखे अब मिलेहि बनत है यहमेरे मनमानी ॥ १९४ ॥

चुनरी रँग न भिजावो मैं तोरी लेहौं बलैयां । बरज मान अवधेश लाड़िले बारबार परौं पैयां ॥ कोमल कमर मुरुकि जैहै देखो जिनपकरौ मोरि बहियां । राम सखे पियजान देहु अब खीझै सासु घर महियां ॥ १९५ ॥

सोरठ ॥

हमसों न बोलना हो लाल । हमनाहिं खेल तुमसों होरी बहुत करी तुमकाल ॥ जादू डारि भोराइ सबको पकरि नचाई बाल । मुखमोड़्यो बरबसन भिगोये अँखियन डारि गुलाल । कृपानिवास श्रीराम खेलमिस करौ अनोखी चाल ॥ ११६ ॥

रागकाफी ॥

अरि तेरे नयनन में कछु जादूसो जानो जायरी। लाल उमंग सों आये खेलन थकित भये मुरझायरी ॥ पिचकारी छूटीकरसों धरमौन बसी मुखआयरी । तेरी ओर चकोर चंदज्यों रहे दृगन ललचायरी ॥ रूप योवन गुन तन मन

अपनो सुधिबुधि सब बिसरायरी । कृपानिवास कहै सुनुगोरी होरीहै कि बलायरी ॥ ११७॥

परिमेरो श्याम सनेही मेरे बस अनुरागरी । अधरामृतदै गलभुज मेलो खेलोंगी संगफाग री ॥ कुचनि गुलाल लाल परडारौं उरझो मन्मथ जागरी । नयनन की सैनन सों छिरको प्रगटकरौ सब लागरी ॥ पियके शीशवोढ़ाउब चूँदरिमैं जुधरौंशिरपागरी । लाल नचावौंआपने आगे मैं गावों हँसि रागरी ॥ जोइ जोइ कह्यो कियो सिय प्यारी भारी भरी है सोहागरी । कृपानिवास महासुख निरखत सखिय सराहत भागरी ॥ ११८ ॥

खेलत सरयूतीर री दोउ प्राण पियारे । धरिकर

धनुष कनक पिचकारी पहिरि रँगीले चीररी होरी मतवारे ॥ दशरथनंदन जनकनंदनी संगसखिन की भीररी नवरूप उजारे । कृपानिवास डरै मति जियसों हरौ हियकी पीररी बड़ि अँखियन वारे ॥ १९९ ॥

होरी खेलत कौशलराज री । जनकनंदनी सखिन सहित रत उझली आनँद आजरी ॥ उत सोहै संग अनुज सखागण छैल छके मदनाग-री । छिरकत सरसरंग युवती अँग अद्भुत कौतुक सागरी । सियरुख पाय धाय नवनागरि रंगन भरि भरि गागरी ॥ पकरे लखन लाल रिपु-सूदन छिटके ललन समाजरी ॥ श्याम गहे मिथिलेश किशोरी लाल बनी नवनागरी।पहिरो

नकवेसरि बर सारी बदौ बदन निज हारी ॥ कुमकुम अगर अबीर भरत दृग प्रमदा उमँगि अनँग आजरी । जनहरि या श्रीरामराय सों जीती रूप उजागरी ॥ २०० ॥

होरी खेलन मन अटके । राम रसिक पिय प्यारी जूके ॥ केसरि नीर दुहूँदिशि छिरकत भरि भरि कंचन घटके। गांसे खेलार बीर रहेठाढ़े सोच पोच सब सटके ॥ कृपासखी के प्राण जिवन धन युगल चरण पर लटके । २०१ ॥

रागधनाश्री ॥

ध्रुपद ॥

कुटिल कटाक्ष पिचकारिसी चलत चारु दुहूँ ओर नेहको उमंग रंग बोरिहै । पलक परत मानों दुरत करत चोट मन्द मुसुक्यानि गही पानि झकझोरिहै ॥ भावके नचावै हहा हावके खवावती हैं बदन बिलास ते करत बरजोरिहै । देखिदेखि आजु छबि प्रेमसखि दम्पति की नैं-ननसों होरि खेलै कुवँरि किशोरिहै ॥ २०२ ॥

होरि खेलिबे को ठाढ़ी जानकी सखिन मध्य रोकै कौन प्रेम सखि उरके अनन्द को ॥ आस पास ज़ूथ ज़ूथ युवती समूह ठाढ़े गीत मिस

गारि देत लाल सुखकन्दको । अंसनि झुकाय कछु मन्द मन्द मुसुक्यात चन्द्रिका झुकी है मत्तमनौ जीति चन्दको ॥ प्रेम सों पगी है रस रूप उमँगीहै आलि अंस सो लगी है कर लिये अराबिंदको ॥ २०३ ॥

शायक से प्रेम सखि चंचल चलत नैन भृकुटी विलास तौ धनुष बनिआइ है । गोलि गोला हावभाव ब्यंगके बचन बाण मन्दमुसुक्यानि जानि सेहथी सोहाइ है । अलकैं सुगन्ध भीजि झलकैं कृपान ऐसी तरल तरौं ना जू सियाछबि छाईहै ॥ नूपुर नगारे भारे होरि जंग जीतिबेको सुभटबधूटिन की फौजैउठिधाइहै२०४

सोरठ ॥

होजि म्हारा राजम्हा सो नीका खेलो होरी। हाथों में पिचकारी लीन्ही अँबिरानि झोरी॥ नैंनामारो बुक्कामेलो माथे रँग टोली। थतौ थारे चतुर कहावो म्हाने जानौ भोली॥ काइ जाना को ठे सीखा ऐसी ठकठोली। जानिपरैली बात कुवँरजू ऐसी म्हाका टोली॥ अँखियां मारि भुलावा काजर मोढे मांढीरोली। वेगि दौर महल में पकरा कोइ दाव़न कोइ चोली॥ कृपानिवास बिलासी रघुबर दीन्ही दामा नोली॥ २०५॥

रागपर्ज ॥

को खेलै यासों होरी इतौ नयोई छैलभयो छीनिलई करसों पिचकारी। हो मोरि बहियां मरोरी ॥ घूँघटखोलि कपोलन छिरकत मुखसों मीड़त रोरी। कृपानिवास रसिक राघौ ने आज़ लाज सबतोरी ॥ २०६ ॥

सोरठ ॥

खेलौं दा होरी मेरे नाले राम रजैटा। रजैटा कुमरश्यौटा गभडूबांधै जरद लपेटा। ऐंडा मैंडा दिलनू सोवो मारा इश्क चपेटा ॥ उमरो हेटा जोबनजेटा गलियों ह्वैगइ भेंटा। कृपानिवास दिलोदां मालिक कौशल्यादा बेटा। २०७॥

होरी आई नवल बहार। बन उपबन घन लता

तरुण तन रस शृंगार सँचार। अपगनन्द मन्द करि मानत सुनि सुनि डफ धुधुकार। असकहि महि बिहरनलागे जन सब कोविद मुद आधार॥ २०८॥

पीतम तोसों मांगन मांगो होरीकी आई बहार। आलस छांड़ि बिहारकरौ नित रैनि सकल पिय जागौ॥ कोविद राज कुमार कहावत रंग जंग जनिभागौ। २०९॥

बिधि जाउगी नयनन में डगर मेरि छाड़ श्याम। कालिह कि बातैं भूलिगये पिय आजु आये छलने॥ भूलिजाउ सगरी चतुराई मारोंगी सैननमें। जानकिदास पिया रघुनन्दन लेतलाइ अँगमें॥ २१०॥

श्याम मुख रंग की बूँददरी । मानहुँकाम कसौटी ऊपर कंचन की कसपरी ॥ अलकैं चुवैं मनौं घनमालारस अनुराग भरी । कृपानिवास अलीगण अँखियां सियबर रूप अरी ॥ २११ ॥

होरी खेलौंगी मैं रामकुमारसों । सिद्धिकहै मेरि प्यारी ननदी मनअटक्यो सुकुमारसों॥मुख लपटाय गुलाल भिगोवो पिचकारिन की धार सों । कृष्णराम नवनेह बढ़ावो सुन्दर रूप अपार सों ॥ २१२ ॥

मति डारौ बरजोरी लाला रंग भरी पिच-कारियां । अनखानी फौजैं की फौजैं मिथिला-पुरकी नारियां ॥ तुमतोहौ रघुबंश लाड़िले हम निमिबंश दूलारियां । रघुबंशी सेना संग तुम्हारे

निर्मि बंशिनकी धारियां सिमिटि लली ढिग आईं सगरी चंद्रकलादिक नारियां। जोसारी पररँगपरैगी लाखों देउँगी गारियां॥मृदुमुसुकाय सजो पिचकारी प्यारी कुमकुमाऽपमारिया। युगलप्रिया लालन कपोल पर दै गुलाल छबि वारियां॥ २१३॥

ग़ज़ल॥

फागुन में फाग फैल के फिरता है फूल के। शिरताज की कलँगी रही जुल्फोंमें झूलके॥ जो औरतै निकसै तिन्हैं पिचकासो हूलके। करता है मारंरंगकी भरताहै झूमिके॥सुन्दरी सुधाबदनी तुझे कहती हौं खूलके। उस्की गली कबहूं अली जाना न भूल के॥ २१४॥

सांवरो होरि खेलन आवै । भरि पिचकारि छिपाय बसन बिच अवचक आनि भिजावै ॥ या अवधेश को छैल नयो सखि करगहि कंप बढ़ावै । रसिक पिया भरि आंखि अबीरन अट पट बैन सुनावै ॥ २१५ ॥

आयरी सखि राम रँगीले । खेलन तुमसों होरिरि गोरी तू क्यों खड़ी रँगढीले ॥ संग सखी कियसखन वेष बर कर पिचकारि गहीले । अबिर गुलाल उड़ावत गावतगारी बोलरसीले ॥ बाजत झांझ मृदंग उपंग मँजीरन टंकतरीले । सुनत सखी धकधकी उठत उर को तियधीरधरीले ॥ आजु सोहागको बागखिलो बड़ भागन सौरभ सीलो । रमकि झमकि रस बोरि पियाको चोर

चितै चितहीले ॥ चंग बजाय चलीगज गामिनि दामिनि ज्यों रमकीले ॥ रसिकअली रंगरेल मची गच कीच गुलाल गचीले ॥ २१६ ॥

नवदुलहिनि खेलौफाग पियसों रंगभरी । प्रथम गवन यह फागुनके दिन सखिय सराहत भाग॥लाज सकेलि सजौ रँग सजनी पियके उर अति लाग।काहुकि कानिकरै जनि हेली मेरही कहे जाग ॥ नाहित आप पिया ते रे मंदिरआवैं गे रसपाग। भामिनि भागि बचौगी कैसे तेरी गवन मदनाग।।तूहैनई चितचोप पियाके तवहि- त नव अनुराग । रसिकपिया रघुनन्द रिझायके लै रसरंग सोहाग ॥ २१७ ॥

नवल बधूपिय रघुनन्दन सों खेलत आई

होरी। मनहुँ नवलघन उदय दामिनी उलहत कला करोरी ॥ शरद मयंकमुखी सँग सखिगण निजछबि रति मदमोरी ॥ कोऊ अवीर गुलाल लिये कर कनक थार भरिरोरी । चोवा अतर अरगजा कोउ लिय चंदन मृगमद घोरी ॥ केसरिरंग भरी पिचकारी डारत सखिन कि ओरी गान करत कल कोकिल बयनी बाजत डफबहु जोरी॥ उतते रसिक शिरोमणि रघुबर बरषत रंगझमझोरी। भीनेबसनझीनेअँगझलकत पीतम दृगरस चोरी ॥ अविर उड़ाय कीन्ह अधिकारी पिय सन्मुख तब दोरी । ढीठभई सखि पकरि पिया को मुखमांड़त रसबोरी । रसिकअली पट गांठि दुहुँनकी बांधि कहतहौं होरी २१८ ॥

ये दोउ खेलत फूल फागरी। आये बसंत सबीबन फूले चात्रिक बोलत मधुर भाषरी॥ उमँगि अनंद अवध अधिकानी भूपद्वार होरी होन लागरी। बाजत ताल मृदंग झांझडफ मध्य स्वरन भरि सरसरागरी॥ श्रवण सुनत शिव बिधिउठिधाये नहिं सोहात जपयोग जागरी।इत रघुनाथसखा अनुजन युत उतसीता लिय सखिन सागरी॥ मनहुँ मदन रति बिपुल बेषधार चढ़यो चाप करिविलग बागरी। अबिर गुलाल रामदिशि छूटे सियसमाज रँगअमित गागरी॥ मचीकीच मगबीच अवध के मुनि मज्जत मानों मकर प्रागरी। ललकारी सिय ललित लाड़िली चली रानि कुलकानि मानिरी॥ललकि झपटि लपटाय

लाल को पियप्यारी के परम भागरी । भीजि गये उर चीर चादरे पट जामा उरमाल पागरी॥ रघुनन्दन श्रीजनक ललीके भये अरुण रँग एक आगरी ॥ जे अलि ओट अटन चढ़ि चितवत रति मलीन वै अति उजागरी । उझकि उझकि बिधु बदन बिलोकत लसत डसत मानो मणिय नागरी ॥ फगुवा देहु मँगाय लालजू पकरि फेंट पट झमकि झांगरी । तुलसिदास अनुकूल जानिप्रभु लियो सबन बर मूल मांगरी २१९ ॥

प्यारे दशरथ राजदुलारे खेलनकैसे पावोगे ऐसिहोरी । गृहगृहते बनिता बनिआई कोइ श्यामल कोइ गोरी ॥ केशरि अगर अबीर लिये कोउ कनक थार भरि रोरी । सीताजू

सैन दियो सखियनको झुंडझुंड उठि दौरी ॥ पकरोरि पकरो कौशल्या सुतको लेहु पितांबर छोरी। फगुवा लेउँगी तबै जाने देउँगी अपने बिरनकी सौरी। की लछिमन को बोल लेउँगी तौ मैं जनककिशोरी॥ फगुवा देउ मँगाय सबन को लेउ सखि भरि भरि झोरी। तुलसिदास धनि धनि राजा दशरथ चिरं ञ्जु रहै दोउ जोरी २२०॥

सुनि आईरी आजु मैंतो होरी की भनक। रंग डारोंगी वाही पै जिन तोर्यो है धनुष॥ झूमिझूमि उठि दौरि भवन ते केसरि रंग कुमकुमा कनक। खेलत राम जानकीके सँगहोत मधुरपिचकारिकी सनक॥ कोऊकहै रँग डारो लछिमन पर कोऊ कहै या खेलारिपै तनक।

कोऊ उमँगि मुखमलत लालको कोऊ हँसत दैदै तारीकी ठनक ॥ अति आनन्द भयो या पुरमें उड़त गुलाल अगर की सलक । तुलसिदास धनिधनि राजादशरथ धनि धनि हैं मिथिलेश जनक ॥ २२१ ॥

अँगिया भिजि गेइ सारीरे किन रँग डारि दियो मेरी । राजादशरथ को कुवँर लाड़िलो अब की फागुन मेरी बारीरे ॥ सुनि पावैगी मेरी सासु ननदिया मुझे देवैगी गारीरे । रामसखे कर पकरि लालको मुख मीड़्यो दैतारीरे २२२ ॥

चुँदरि भिगोय दईहो राघो । चटकीली झमकीली लहरैं अबहीं मोललई हो राघो ॥ जुल्मी जोर कह्यो नाहिं मानै मल्हकन आनि दईहो

राघो । रँग पिचकारी भरि ऊपरडारै गारी देतनई हो राघो ।। छीकतही मैं घरसों निकसी ताको फलये लई हो राघो । हित जयराम घर जानदे लाला जो कछु भई सो भई हो राघो ॥ २२३ ॥

राम कपोलन ऊपर सोहै । लाल गुलाल कि प्यारी रेखैं ॥ मनहुं मदन युगढाल चढ़ाई अरुण प्रबाल की सुन्दर पेखैं ॥ कीधौं श्याम कमल दल कबिजन प्रात उदै रबि जोति बिशेखैं । कृपानिवास रंगीली आंखैं जानै जो निशि बासर देखैं ॥ २२४ ॥

परी गुलाल तनिक दृगकरकै पियपर सियजू तरक चलाई । जाने सुघर शिलाके तारक मृदुसरिता उर नाउ धराइ ॥ कारे भ्रमरकमल

दल खूदत धूर्म बिगारत लखि उजलाई । कृपा निवास रहो मति उरझो रसिक भये रसपर खन पाई ॥ २२५ ॥

जाने जू तुम रसिक होरीके । आये हौ रस लेन गोरीके ॥ अलग रहौ जानि छुवो छबीले नाहिं चलै छल छैल जोरीके । बसन उतारि भरों दृग काजर करौं कपोलन चित्ररोरीके । नवला जानिकरौं बरजोरी गुण दरशावो मैं आजुरीभोरी के । चितवनि चाट चटाय करौ बस धीर धरो धुरधारि धोरीके ॥ कृपानिवास सिया स्वामिनि सँग करो मनोरथ सुमति तोरीके ॥ २२६ ॥

सोरठ ॥

अलग रहोजिकाई चललग राज । गातभि-

जोवो काई हाथचलावो कोठे गई छै थारी लाज॥
गयला ज्यों छैला सँगडोलै देखिसखीरु समाज॥
कृपानिवासकहै सुनुगोरी होरीरोसुखआज २२७

ऐसी नारि रंगीली कहोरि कहांते आई।
हमखेलत औरनसँग फगुवा अपनी।औरबचाई॥
मारि कुमकुमन भागिजात हैं ठाढ़ि होत
मुसक्याय नयनसों नयन मिलाई॥कहत अली
मिथिलेशलली जु की सुनिय लाल रघुराई॥
हमरे समाजकि नाहिं अली यह तुम्हरी बहिनि
सोहाई।नईरसरीति जनाई।और बात यकसुनि-
ये छबीले युगल प्रिया बलिजाई॥ जैसी कृपा
करी पिय इन पै वैसी रहै सदाई।हँसी सब
ताल बजाई॥ २२८॥

रागपर्ज ॥

होरि खेलिय प्यारी प्यारो आयो मनावन । कालिह मरोर करीसो निहोरत जोरत हाथ बिहारी मसलि गुलाल लाल दृग आंजो नाचो गावो गारी । कृपा निवास रसिक राघो से लै बदलो बलिहारी ॥ २२९ ॥

रागधमार ॥

अहो पिया मोहिं गुलाल जनि छिरको सुरँग चूँदरी भींजै । दशरथ लाल सुजान सांवरे बिनति करत सुनि कीजै ॥ कोमल करज मुरुकि जैहै देखो झकझोरनि नहिं कीजै । बरज मान अवधेश लाड़िले सासु ननँद घर खीझै ॥ क्यों तोरत मोतिन लर प्यारे चाहिये सो रस पीजै ।

रामसखे चलि कुंजन में अब यह फगुवा मोहिं दीजै ॥ २३० ॥

सारी भीजिगई पियडारो न मोपर रंग। शीत भरी कंपत तन मेरो दीजै गलभुज संग ॥ लखि ललचाय ललकि लै प्यारी खेलत नवल उमंग। रसिक अली सुन्दर मणि रघुबर बाजत मृदुरव चंग ॥ २३१ ॥

मारी गोइयां गुलाब की छड़ियां। सियाराम मिलिहोरी खेलै रँग बरसत पिचकारिन झरियां॥ मैं अपने रँग राती माती मोपर डारै अबीरदि पुरियां। कृपा निवास को दासी कीजै रंगमहल के द्वारे खड़ियां॥ २३२ ॥

बलमा तोरेसंगवा वे अबतौ खेलौंगी होरी।

जबलौं अयानी कछुवोन जानी अब योबनकी जोरी ॥ फागुन में मरजाद कवनकी निकसौंगी घर पौरी । पटकौं लाज तुम्हैं गहि अंटकौं झटकौं रंगि पीत पिछौरी ॥ सुख मीड़ौं दृगकाजर भरिहौं करिहौं जो रुचि मोरी । कृपा निवास रसिक राघो के लै रँग सनमुख दौरी ॥ २३३ ॥

सखियां लागीं छिरकन वे रंगपट पकस्यो पटरानी । मनहुँ तमाल फलन हित कोटिन दामिनि सींचत पानी ॥ केसरि नीर अंग सों दरकत उपमा कछु उर आनी । मानहुँ नील सिखरसों झरि झरि शारद धरनि बहानी ॥ बागो बसन लसन तनकी छबि कबि कोबिद थकि बानी । मानो सुखमा गण कुमकुमसों राचि चरचत

रूप सिहानी। तापर डारत लाल गुलालहि बाल सबै मुसुकानी। कृपा निवास रसिक राघोसों सियकी केलि बखानी॥ २३४॥

कहँ सीखेहो लाल अनोखे ख्याल दृगभरत परायन करत कसक। गावत निलज खिझावत हँसि हँसि पकरि नचावत स्वकर मसक॥ नाहिंन होरीहै बरजोरी परिहै कुँवर तुम्हें और चसक। कृपा निवास सिया जू कहतहै पियजू भये कछु नयसे रसक॥ २३५॥

होरी रंग धूम मचावै रे रसिया। भरि पिचकारि मेरे ऊपर डारै अपनी ओर बचावै रे रसिया। रहो री रहो अब की या धरि दृग अंजो मुखरंगन रचिया॥ जैरामहित अपनी करिहौं पकरिके

नाच नचाओरे रसिया ॥ २३६ ॥ ॥ ॥

खेमटा ॥

किशोरिके साजना साजन होरी में धूम मचाई साजन। हो अँगियां की बन्दतोरी गगरि शिर फोरी मेरिबारी योबन मसकाई। साजनहो॥श्याम सखे परौं पइयां हमारे गोसइयां तेरि मुसकन मोल बिकानी ॥ २३७ ॥

रागधनाश्री ॥

दृगन कब देखब पीतम प्यारी। श्याम बरण श्री राजकुँवर बर गौर श्री राजकुमारी॥ केसरिया बर बसन लसनि तन भूषण मृद रवकारी। अलकैं कुटिल श्याम अँसनपर तिलक

बिंदु मनहारी ॥ लाल गुलाल भरे कुचगंडन कर सरोज पिचकारी। बिहरनि बाग विपिनि कुंजनि में रस मग सौंध अटारी। होरि खेलनि छलबल कलकरि कहूँ फौज सखियांरी ॥ रंगन भीजि बसन अंग लिपटनि लीला सुचि सुख कारी । फेरि नैन मुख मृदुहँसि हेरनि मणि बुलाक उजियारी ॥ रसिक अली कब वहदिन ऐहै भेटिहौं भरि अंकवारी ॥ २३८ ॥

मोसौं नाहक करि बरजोरी लालन होरी खेलीहो। मैं कोउ हेतु अकेलि गली चली धरि कर करहि मरोरी ॥ विनय बरजि तरजो नहिं मानै सान्यौ मुख रोरीहो। लाजनहीं गुरुजन पुरजन तोहिं अब मैं काहकरौं री। कोविद कबि

ठवि होरि नहीं यह यहहै झोराझोरी ॥ २३९ ॥

आवो पिया खेलिये होरी । करौ तुम छैल फैल चोरी ॥ आपन सुघर प्रबल करि मानौ हम अबला भोरी । गहो गहो अब जानन पावै धाइ अली चहुँओरी । झपटि लपटि पटुकाकर लीन्हीं पीताम्बर छोरी ॥ तियके भूषण बसन बनाये मुखमांडो रोरी ॥ दम्पतिअली नचायलाल को तालदेत गोरी ॥ २४० ॥

प्राणप्रिया सँग होरि खेलोना । मेरे मनकी चाह रसरंग भरोना ॥ कानै बनी करी नहिं हमने जानि परै सोकहो बोलोना । रसिक कहावत कसक न आवत रस चाहत रसरीति चलोना ॥ पिया रिस छोरत पिय कर जोरत मुखमोरत

घूँघट खोलोना ॥ दम्पति अलि दोउ उमड़ि-
सिन्धुलौं सो सुख अतुल तोल तोलौना २४१॥

समर होरी खेलिये रघुबीर। आवत है श्री
जनक नंदनी संग सखि नकी भीर ॥ कलिह
धोखेरँग डारिदियो है लखन लालर णधीर। चट-
कीली रँग भीजि गई है महरानी जि को चीर॥
अबकी भागे नाहिं बचौगे ल्यो सरयू के तीर।
रामदास दै हांक कहत है सुनिये चारौबीर २४२

बावरी बनिआई तुम्हैं किन फाग खेलाई।
घूँघटमें मुखचंद छिपै नाहिं नयनन में चतुराई॥
अबजो भई तुम नवल दुलहिया चोलिया कहां
दरकाई। कौन बेरकी गइ सरयूको सांझ भयेघर
आई ॥ अङ्ग अङ्ग पियराई छाई कान्हर चुरीकर

काई। चलत झमाक अङ्ग सब मोरत बात कहत झकि जाई॥ अवध छैल सों भेटभई कहुँ सोमनि गइ मुसुकाई॥२४३॥

नयन गुलाल न गरिये पिय खेलि न जानो जू। रसमंदिर पटलाइ कि कैसे रस उर ठानो जू। अति सुकुमार नवल रङ्ग याके नेह निशानो जू॥रसिक छैलरस लीजिये लखि छुवतपरानोजू। रसरसरस बसकीजिये जैसे सूत सुतानोजू॥रसिक अली रघुनन्द नवल जिय हितकी मानो जू २४४

खेलत खेलत खेल में प्यारी मानन करियेजू। हास बिलासै फागुनके दिन पियरस हरियेजू॥ जोतुव नयन अबीरभरे पिय पियदृग भरिये जू। खेल खेलाय गहो रघुबरको दाव टरिये जू॥ मांडि मयंकमुखी मुख पियको जियरिस धरिय

जू प्यारी ॥ अवचक हमने डारो गुलाल सौं अँखियन में भरिरह्यो है तुम्हारी । तापर रावरि ढीठ सहेली फूलछड़ी हमको बहुमारी ॥ हमतो न तापर रोस धरोमन सुखमानों जिय चूक बिचारी । अबजो उचित न्याय रसबोधित सुनि लीजे मुख बिनय प्रचारी । रसिकअली दैबीच निवेरनि बेरनि खेलदांव मिथिलेशदुलारी २४६॥

होरीके दिनन में सानन करिये मानोजि मानोजि म्हारिबात । लखिय न सुनि यह रीति अली हम खेलतमें खुनसात ॥ विनय करत रघुराज सांवरो पदगहि हाहाखात । सीचिय सुघर शिरोमणि सियजू पियपादप कुलिहात ॥ मृदुहँसि रहनि बोलनी बंकनि शंक

पिया कदरात । सनमुख हमसों होत सखी कर जोरत युग जलजात ॥ सखि मुखपियकी विनय सुनत सिय मृदुबच कहि मुसुकात । रसिकअली रसरंग भरो पिचकारि दई पियगात ॥ २४७ ॥

रागखम्माच ॥

आजु ललन तुमसों खेलौंगी मचिके । पाग भिगोवोंगी मैं अपनी उमँग सों ॥ कैसेकै ललन घरजाउगे बचिके । रोरि बरजोरि मुख मलत सांवरे ॥ बहुत झगर कीन्ही तुमहँसि हँसि। दांउलेउँगी मैं यकयक जचिकै ॥ मुक्ता मांग नयन बिच काजर पहिरावों घांघरो चूँदरो कृष्णराम पिय छूटोगे नचिके २४८ ॥

अनुजनसंग बने होरि खेलत रामउदार। गृह

गृह ते बनिता बनिआईं कीन्हे बिबिधि शृँगार॥ कुमकुम अगर अबीर गुलालन संगलियेबहुभार । उत रघुबीर सखा बनिआये रंग भरे पिचकार ॥ एकओर मिथिलेशकुमारी उतअवधेश कुमार । खेलहिं भाग झुमुटि दोउ रिसिते काहूसुधि न सम्हार ॥ बरषहिं रंग अबीर गगन धुनि बाजन गानअपार।एकसखी ह्वैसखा रामढिग आइसुनो मतसार ॥ रामचरण मुखचूमि परानी हँसिरहे राजकुमार ॥ २३९ ॥

पिचकारि तिहारि रंगदार लला जानि डारो मोपै । सी उपजावत कंप बढ़ावत रहत न देह संभार ॥ रसिक पिया दृग चोट चलावत सुंदर राजकुमार ॥ २४० ॥

इतिश्रीसीतारामराम षटऋतुपदावली संग्रहसंपूरणम् । ५ ॥